एक अनूठी सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय व साहित्यिक मासिक पत्रिका

ISSN 2277-7660

# अमर ज्योति

» वर्ष 64 » अंक 1 » जनवरी 2013

## नववर्ष मंगलमय हो

Happy New Year

2013

Happy New Year

विजित हर संघर्ष हो, मन में उमंग हर्ष हो
सबका उत्कर्ष हो, मंगलमय नववर्ष हो।

# अमर ज्योति

के सुधी पाठकों और विद्वान् लेखकों को

**बिश्नोई सभा, हिसार**

व

**अमर ज्योति पत्रिका की ओर से**

**नववर्ष**

# 2013

**की ढेरों शुभकामनाएं**

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक

सन्दीप गोदारा

Mob.: 094663-71529

सभा कार्यालय दूरभाष

Tel.: 01662-225804
E-mail.: editor@amarjyotipatrika.com
info@amarjyotipatrika.com
Website.: www.amarjyotipatrika.com

कार्यालय पता:

'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125001 (हरियाणा)

इस पत्रिका में व्यवस्थापक के अतिरिक्त उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 70/-

आजीवन (50 वर्ष के लिए) सदस्यता शुल्क : 700/-

''अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें''

# अमर ज्योति का ज्ञान दीप अपने घर आंगन में जलाइये


| क्र. | विषय सूची | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय | 2 |
| 2. | सबद-13 | 3 |
| 3. | साखी कणां की | 5 |
| 4. | भजन | 6 |
| 5. | भगवान श्री जम्भेश्वर की..... | 7 |
| 6. | नववर्ष का अभिनन्दन | 13 |
| 7. | गुरु जाम्भोजी की वाणी में युगबोध | 14 |
| 8. | बधाई संदेश | 17 |
| 9. | हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता ..... | 19 |
| 10. | जाम्भाणी साहित्य में श्री हनुमत्... | 23 |
| 11. | कल्पतरू कंकेड़ी | 26 |
| 12. | दिव्यताओं का विस्तार है प्रौढ़वस्था | 27 |
| 13. | सामाजिक हलचल | 29 |
| 14. | सामाजिक क्षति | 32 |


सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

## सम्पादकीय...





# संकल्प बद्ध हो नववर्ष

समय परिर्वनशील है, इसका पहिया न आज तक रूका है और न रूकने वाला है। इसके गतिमान पहिये की करामात है कि साल तो क्या युग भी बदलते रहते है। जब तक यह अंक आपके हाथों में पहुंचेगा तब तक वर्ष 2012 इसके पहिये के नीचे आ चुका होगा और 2013 का आगाज हो चुका होगा। प्राय: हर वस्तु का आगाज जितने धूमधाम से होता है उसकी विदाई उतनी ही चुपके से होती है क्योंकि बीते हुए के प्रति हमारा उपेक्षा का भाव रहता है। वस्तुत: कलैण्डर में एक वर्ष का बीतना वैसे ही है जैसे इतिहास की अंगूठी से एक ऐसे नग का झड़ जाना जो कभी फिर नहीं लग सकता, परन्तु यह झड़ा हुआ नग बहुत शिक्षा दे सकता है, यदि कोई इसकी भाषा को समझे तो। वैसे तो उदय होने वाला हर दिन नया होता है फिर भी कलैण्डर से किसी एक वर्ष का चले जाना और एक नए वर्ष का आ जाना बिल्कुल साधारण घटना नहीं है, इसलिए हमें नये वर्ष का स्वागत नये उत्साह के साथ करना चाहिए क्योंकि जिसका आगाज अच्छा होता है उसका अंजाम भी अच्छा होता है। नया वर्ष हमें ऐसे लगना चाहिए जैसे नई उमंगों, नई तरंगों, नए संकल्पों, नये ख्वाबों से भरपूर एक नई सुबह निराशा व अवसाद के अंधेरे को चीरकर हमारे जीवनरूपी आंगन में उतर रही हो। इससे हमें एक नई ऊर्जा व चिंतन का नया आयाम मिलता है जिससे सकारात्मकता का विकास होता है अन्यथा नये वर्ष के नाम पर केवल दीवारों के कलैण्डर ही बदलते हैं।

नये वर्ष के उत्साह में हम बीते हुए वर्ष को बिल्कुल भूल जाते हैं जो उचित नहीं है क्योंकि बीता हुआ वर्ष हमारे लिए एक पाठ की भांति होता है जो हमें भविष्य की राह दिखाता है। गत वर्ष में रही कमियों, त्रुटियों से सबक लेकर ही हमें नये वर्ष के सपने बुनने चाहिए। निश्चित रूप से ऐसे अवसर हमारे लिए चिंतन के नये द्वार खोलते हैं और यह समय होता है- नव संकल्प लेने का। इस नये वर्ष का स्वागत भी हमें नव संकल्प लेकर करना चाहिए। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उन सब बुराइयों व आदतों का त्याग व उन्मूलन करेंगे जिनसे स्वस्थ समाज व मानवता के पथ में बाधा उत्पन्न होती है। हमारा यह संकल्प होना चाहिए कि हम गुरु जम्भेश्वर भगवान सदृश महापुरुषों के द्वारा दिखाए गये पथ पर पूरी सुदृढ़ता से चलेंगे। ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे दूसरों के हृदय पर चोट पहुंचे और मानवता कलंकित हो।

आज वर्तमान के इस माहौल का अवलोकन करें तो हमें ज्ञात होता है कि हम अपना अधिकांश समय व ऊर्जा व्यर्थ के वाद-विवादों, मतभेदों व झगड़ों में बर्बाद करते हैं। नव वर्ष में हम संकल्प लें कि अब हम इन सबसे दूर हटकर हमारी प्रतिभा व क्षमता का उपयोग सामाजिक जागरूकता, ज्ञान विस्तार और पर दु:ख हरने में करेंगे। ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, चुगली, नशे आदि को पूर्णतया त्यागकर आपसी प्रेम, भाईचारे, विष्णु भजन, पर्यावरण रक्षा, यज्ञ आदि का संकल्प लेकर ही हम सही अर्थों में नववर्ष का स्वागत कर सकते हैं। यदि हम एक संकल्प ले लें तो उपर्युक्त सभी संकल्प अपने आप पूरे हो जाएंगे कि हम गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा बताए गए नियमों का अक्षरक्ष: पालन करेंगे। नववर्ष 2012 की आप सभी को ढेर सारी मंगलमयी शुभकामनाएं। नववर्ष में चहुंओर सुख, समृद्धि और  का वास हो, ज्ञान व धर्म का प्रकाश हो। गुरु जंभेश्वर भगवान से प्रार्थना कि नव वर्ष में-

**सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:ख भाग भवेत।।**

(सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमयी घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दु:ख का भागी न बनना पड़े।)

# सबद - 13

**प्रसंग -**

**जम्भेश्वर बैठे सही, संत सभा के मांय।**
**जाट आय ऐसै कही, सतगुरू कहो समझाय।**
**पुण्य दान की बात का, बहुत करे प्रज्ञान।**
**थे कांसु समझायस्यों, म्हेई जाणु सुजान।**
**दान पुण्य देवां घणां, भोपा भरड़ा देव।**
**जाप बहुत सा हम करां, पूजां देवी देव।**

सारण गोत्र के शोभाराम जाट ने आकर सभा में आसीन गुरु जाम्भोजी से कहा- कि आप हमें व इन लोगों को कौन सी नयी बात बतला रहे हैं। हम लोग दान पुण्य की बात को तो पहले से ही जानते हैं और घर पर आये हुऐ भोपा, भरड़ा सुपात्र-कुपात्र का बिना विचार किये हुऐ अपने यश की प्राप्ति हेतु देते हैं तथा जप उपासना भी करना जानते हैं। देवी, जोगणी, भेरु, भूत-प्रेम आदि की पूजा तो हम पहले से ही करते आये हैं। परमेश्वर की आराधना का तो कोई मतलब ही नहीं है। जैसे ही जपता है वही भी, वैसा ही नहीं जपता वह भी, इसमें कोई अन्तर नजर नहीं आता है। अब आप हमें नयी कौन सी बात बताने जा रहे हैं। तब श्री देवजी ने कहा है मूढ़ जड़ जाट! मैं तेरे को असली भेद बतलाऊंगा जिससे तूं संसार सागर से पार उतर जायेगा।

**सबद -**

**ओ३म् कांय रे मुरखा तैं जन्म गुमायों, भुंय भारी ले भारूं।**

भावार्थ - रे मूर्ख ! तुमनें इस अमूल्य मानव जीवन को व्यर्थ में ही व्यतीत क्यों कर दिया। यह तुम्हारे हाथ से निकल गया तो फिर लौट कर नहीं आयेगा। इस संसार में रह कर भी तुमने चोरी, जारी, निंदा, झूठ आदि पापों की पोटली ही बांधी है। जब इस संसार में आया था तो काफी हल्का था, निष्पाप था किन्तु यहां आकर इन पापों के बोझ से दब रहा है और इस धरती को भी भार से बोझिल बना दिया।

**जां दिन तेरे होम नै जाप नै, तप नै किरिया।**
**गुरु नै चीन्हो पन्थ न पायों, अहल गई जमवारूं।।**

उन दिनों में जब तूं स्वस्थ था तथा अमावस्यादि पवित्र दिन थे। उन दिनों में तुम्हे हवन, जप, आराधना, तपस्या तथा शुद्ध सात्विक क्रियाएँ करनी चाहिये थी। इस संसार में रहते हुए तुझे गुरु की पहचान करके उनसे सम्बन्ध स्थापित करना था तथा उन सद्गुरु से प्रार्थना करके सद्मार्ग के बारे में पूछ कर उन पर चलने का प्रयत्न करना चाहिये था। यह शुभ कार्य तुमने नहीं किया तो तेरा जन्म व्यर्थ ही चला गया।

**ताती बेला ताव न जाग्यों, ठाढी बेला ठारूं।**
**बिंबैं बेला विष्णु न जंप्यों, तातैं बहुत भई कसवारूं।**

प्रत्येक दिन में तीन बेला आती है, प्रातः, दुपहरी, और सायं ठण्डी वेला। उसी प्रकार से मानव जीवन की भी बाल्यावस्था, यह बिम्बै बेला है। युवावस्था यह ताती बेला है क्योंकि युवावस्था का खून गर्म होता है और वृद्धावस्था यह ठण्डी बेला है, यह अन्तिम अवस्था है इसमें तेज मन्द हो जाता है। हे प्राणी! इन तीनों अवस्थाओं में तुमने भगवान विष्णु का भजन नहीं किया तो बहुत ही बड़ी कमी रह गयी। अपने जीवन को सुफल नहीं पाया इससे बढ़ कर और अधिक हानि क्या हो सकती है।

**खरी न खाटी देह बिणाठी, थीर न पवना पारूं।**

शुभ कर्तव्य कर्म तो तूने किया नहीं वैसे ही आल-जंजाल में फंसा रहा। उहा-पोह में तेरे शरीर की आयु व्यतीत हो गयी क्योंकि इस संसार में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है। पवन, पानी, तेज, पृथ्वी आदि सभी का समय निश्चित है इसीलिए तेरा श्वांस भी स्थिर कैसे हो सकता है।

**अहनिश आव घटंती जावै, तेरे श्वांस सबी कसवारूं।**

दिन और रात्रि करके तुम्हारी यह सीमित आयु घटती जा रही है। ये तेरे प्रत्येक श्वांस बड़े कीमती है। एक एक श्वांस का मूल्य चुकाया नही जा सकता।

**जा जन मंत्र विष्णु न जंप्यों, ते नर कुबरण कालूं।**
**जा जन मंत्र विष्णु न जंप्यो, ते नगरे कीर कहारूं।**
जिस मानव ने परमपिता परमेश्वर अवतार धारी सर्व जन पालन- पोषण कर्ता भगवान विष्णु का जप नहीं किया वह चाहे भले ही मृत्यु के उपरांत दूसरे जन्म में मानव योनी को प्राप्त कर ले किन्तु वह अच्छा सुस्वस्थ मानव कदापि नहीं हो सकता। उसे किसी दुखी परिवार में जन्म लेना पड़ेगा। वह काले रंग का दुष्ट प्रकृति वाला ही होगा या नगर में रह कर दिन भर गधे की तरह भार उठायेगा। मानव शरीर तो प्राप्त हुआ किन्तु विष्णु कृपा बिना पवित्र श्रीमानों के घर पर जन्म मिलना अति दुर्लभ है।

**जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, ते कांध सहै दुख भारूं।**
**जा जन मंत्र विष्णु न जंप्यों, ते घण तण करै अहारूं।**
जिस प्राणी ने सर्वत्र व्यापक भगवान विष्णु का जप नहीं किया वह जन्मान्तर में कंधे पर भार उठाने वाला शरीर प्राप्त करेगा तथा अत्यधिक भोजन करने वाला शरीर जो कभी पेट भी भरता नहीं जो सदा भूखे रहने वाले पशु पक्षी या मानव शरीर को धारण करेगा।

**जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, ताको लोही मांस विकारूं।**
**जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, गावैं गाडर सहरै सुवर जन्म जन्म अवतारूं।**
जिस प्राणी ने मानव शरीर धारण करके हरि नारायण विष्णु की सेवा पूजन तन-मन-धन से नहीं किया उसके लोही, मांस में सदा विकार पैदा होगा अर्थात् सदा ही रोगी रहेगा और दूसरे जन्म में गांवों में गाडर - भेड का जन्म होगा तथा शहरों में सुअर का जन्म धारण करना पड़ेगा जिसे सदा ही दुख झेलना पड़ेगा।

**जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, ओडा के घर पोहण होयसी, पीठ सहै दुख भारूं। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, राने वासो मोनी बैसे ढूकै सूर सवारू।**
मानव शरीर धारी के स्वकीय मूल स्वरूप देवाधिदेव विष्णु परमात्मा की प्राप्ति के लिये उन्हीं परम सत्ता से सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये। सम्बन्ध स्थापित करने का प्रमुख साधन विष्णु का नाम स्मरण ही है, यदि कोई ऐसा नहीं कर पाता है तो वह जन्मों जन्मों में गधे का जीवन धारण करके अपने मालिक ओड के यहां पर भार उठाना पड़ेगा। या फिर डोड - गृध पक्षी का रूप धारण करके रात्रि में तो कही आहार के लिये जा नहीं सकेगा भूखे ही रात्रि व्यतीत करेगा। प्रातः काल ही मौन रह कर गंदगी में अपना भोजन प्राप्त करेगा।

**जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, ते अचल उठावत भारूं।**
**जां जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, ते न उतरिबा पारूं।**
**जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यों, ते नर दौरे घुप अंधारूं।**
जिस पंच भौतिक शरीर धारी आत्मा रूप मानव ने अनन्त अवतारधारी भगवान विष्णु को हृदयस्थ नहीं किया उन्हे चौरासी लाख जीया जूणी रूपी अचल भार को उठाना पड़ेगा। वह संसार सागर के दुखों से पार तो नहीं हो सकता? और बार बार जन्म- मरण को प्राप्त हुआ कठिन अन्धकार मय भयंकर नरक में गिरेगा।

**तातैं तंत न मंत न जड़ी न बूंटी, ऊंडी पड़ी पहारूं।**
**विष्णु ने दोष किसो रे प्राणी, तेरी करणी का उपकारूं।**
इसीलिए इन दुखमय योनियों से छूटने के लिये न तो कोई तंत्र है, न ही कोई मंत्र है, न ही कोई जड़ी या बूंटी ही है। इनसे छुटने का मात्र एक उपाय केवल भगवान विष्णु ही है, वही तुम्हें छुड़ा सकता है। यदि वह अवसर चला गया तो फिर लौट कर नहीं आयेगा। बहुत दूर चौरासी लाख पर चला जायेगा। फिर कभी भूल कर विष्णु को दोष नहीं देना। प्रायः लोगो को जब कष्ट आता है तो भगवान को दोष देते हैं। हे प्राणी ! तूं ऐसा कभी मत करना। ये सुख दुख तो तेरे कर्मो का ही फल है। बीज तो मानव स्वयं ही बोता है पर बीजों को फूलने-फलने में सहायता भगवान स्वयं करते हैं इसलिये जैसा बीज बोवोगे फल भी तो वैसा ही होगा। तो फिर स्वयं का दोष दूसरों के उपर क्यों डालता है।

❑ सामार जंभसागर

उदो जी कृत

# साखी कणां की

**दिन जागो दिन जागो, ओ गुरु परगट आयो।।**
**संभराथलि सतगुरु प्रकास्यों, चोचक आण फिरायो।।**
**गाफल भूल रहया भूलावे, करणी साध चेताओ।।**
**गाफल धूल अभेद मूरखा, क्यूं परचे परचायो।।**
**गुरु न चिन्हो पंथ न पायो, अहलो जलम गुमायो।।**
**करणी हीन कुचील कुबधी, मिनखा रतन गुमायों।।**
**रहे निरन्तर नर निरहारी, भल तीरथ निज बाणी।।**
**खूद्दिया तिसना निन्द्रा नाही, न पीव गोरस अन पानी।।**
**सुरगापुर का माघ बतावै, इसड़ा लहोरे बिनाणी।।**
**सतगुरु निंदे देवल बिंदे, धोके काठ पखाणी।।**
**तीरथ न्हावै पिंड छलावै, जोय-जोय नीर निवाणी।।**
**सुरगापुर रा माघ न जाणै, भूला भुंवै इवाणी।।**
**अश्वपति जातां दीठा, कोटा रां सिरदारा।।**
**ते राजिन्दर जातां दीठा, चिण बंक दवारा।।**
**जांरी आण दुहाई फिरती, छतर सिर छतर धारा।।**
**धंधो करता जंवरै मुवा, पड़िया रहया पसारा ।।**
**सुर तेतीसा सूँ कर मेलावो, म्हारे उपाहो गुरु अपारा।।**
**वीणतड़ी ऊदो बोलै, सेवक विष्णु तुम्हारा।।**

भावार्थ- हे सज्जनों! अब जग जाओ! सूर्योदय हो चुका है अब दिन हो गया है। रात्रि का अन्धकार नहीं है क्योंकि स्वयं विष्णु ही गुरु के रूप में प्रकट हो चुके हैं।। सम्भराथल पर सतगुरु ने ज्ञान का प्रकाश किया है और यही ज्ञान चारों तरफ फैल चुका है। इस जम्बु द्वीप में मर्यादा बांधी जा रही है किन्तु आप लोग अभी तक सो रहे हो। गाफिल मूर्ख लोग तो सद्मार्ग को भूल चुके हैं और दूसरो को भी भुलावे में डालकर धर्म विमुख कर रहे हैं। सतगुरु ने आकर कर्तव्य कर्म का पाठ पढाकर सचेत किया है। साधुजन तो सावधान हो चुके हैं।। शैतान की तो कुबध्या ही खेती है वे लोग तो स्थूलता, मूर्खता भेदभाव पना ही अपना धर्म कर्म मान बैठे हैं उन्हें कैसे मार्ग में लाया जा सकता है। ये लोग अपना स्वभाव छोड़ने के लिये तैयार नहीं है। इन लोगों ने तो गुरु का ही स्मरण करके पहचाना और न पंथ को ही अपनाया, व्यर्थ में जन्म खो दिया।। कर्तव्य हीन, कुचील, कुवध करने वाले ऐसे लोग तो इस संसार में आकर हानि को प्राप्त हुये हैं क्योंकि मानव जन्म रूपी रत्न को इन्होंने खो दिया है। यहां सम्भराथल पर सतगुरु आये हैं निरन्तर यहीं पर ही निवास करते है। किन्तु निरहारी है। सांसारिक वस्तुओं की आवश्यकता उन्हें नहीं है। उनके यहां पर निवास करने से अच्छा तीर्थ बन चुका है। उनकी वाणी भी उनकी अपनी निजी अनुभूति है इसलिए निराली ही है। भूख, प्यास, निन्द्रा आदि उन्हें नहीं सताती। इसलिये दूध, दही, घी, अन्न, जल आदि ग्रहण नहीं करते। वे तो सदा अमृत रस का ही पान करते हैं।। स्वर्ग में या वैकुण्ठ में जाने का मार्ग बता रहे हैं। हे प्राणी! ऐसे सतगुरु की शरण ग्रहण करो जो जन्म मृत्यु के चक्कर से छुड़ा दे।। कुछ लोग सतगुरु के सिद्धान्त मार्ग को नहीं अपनाते किन्तु सतगुरु की निन्दा भी नही करते हैं और मूर्तियों पर जाकर मत्था पटकते हैं। ये मूर्तियां तो काठ या पत्थर की होती हैं। चेतन-मय ज्योति को छोड़ कर पत्थर पूजा कहाँ तक उचित हैं। अन्य कुछ लोग तीर्थो में जाकर या घरों पर बैठे हुये ही धोक लगाते हैं, पूजा करते हैं। गयादि जगहों में जाकर पिण्ड भराते हैं। मृतक को जल अन्न देते हैं ये लोग तो जल की भाँति नित्य निरन्तर नीचे ही गिरते जा रहे हैं। स्वर्ग पुरी का मार्ग तो जानते ही नहीं परन्तु इस लोक में ही भूले हुऐ भूल में भटक रहे हैं। ऐसे लोगों का जीवन ही व्यर्थ है। खाली ही रह गये कुछ भी प्राप्त नहीं कर सके। इस संसार में अब तक कौन स्थिर रहा है अनेको घोड़ों के मालिक हाथियों के मालिक भी इन अपनी सम्पति को

छोड़कर जाते हुये देखे है और बड़े-बड़े कोट किलों के स्वामी भी चले गये। वे राजेन्द्र भी जाते हुये देखे हैं जिन्होंने अपने रहने के लिये बड़ी-बड़ी हवेलियाँ किला बनाया था। सुरक्षा का प्रबन्ध युक्ति से किया था। परन्तु उनकी सुरक्षा नहीं हो सकी। जिन राजाओं का संसार में आदेश अन्य सभी लोग माना करते थे उनके भय से लोग डर जाते थे। वे सम्राट थे जिनके सिर पर दिव्य छत्र मुकुट रखा जाता था वे भी चले गये। अनेको धन्धा करके धन जोड़ा जाता था किन्तु उन्हें भी लेकर नहीं गये। हे देव। हमें तो तेतीस करोड़ से मिला दो। हमें तो उनसे मिलने की बड़ी उम्मीद एवं उमंग हैं। ऊदो जी विनती करते हुऐ कहते है कि हे विष्णु मैं तो आपका ही सेवक हूं। मुझे अन्य किसी से कोई आशा नहीं है।

❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁

# भजन

तेरो जन्म-मरण मिट जाय, तू गुरु को नाम सुमिरले।
मन के कहे तूं मत कर भक्ति गुरु कहें सो करले।।
घर गृहस्थी के सुख को छोड़ा, सन्यासी का लिबास लिया,
मेहनत की तू छोड़ कमाई, मांगन में विश्वास किया।
मां बाप की सेवा छोड़ तू, स्वर्ग का राज गंवाय दिया।
तू ही उन अन्धों की लाठी क्यों, अपना फर्ज भुलाय दिया।
घर बैठे हरि नाम सुमिरले, मां-बाप की सेवा करले,
मन के कहे .....
जटा रखाई भम्भूत लगाई, भांग नशे का पान किया,
अपने तन की सुध भी खोई, तो प्रभु का कैसे ध्यान किया।
पानी के अन्दर खड़ा रहा और पानी में ही जाप किया,पांच
अगन के बीच बैठ कर, अग्नि का भी ताप किया।
उल्टा लटका मौन में अटका, स्वांसा रोक कमाल किया।
ना साध सन्तो का मार्ग जाना, हठ कर्म पर ध्यान दिया।
सब हठ कर्मो को छोड़ कर, तूं ध्यान को नाम सुमिरले।
तेरो जन्म मरन मिट जांय, तूं गुरु को नाम सुमिरले।
मन के कहे .....
मन-मत होकर करी भक्ति, सारी दुनिया घूम लिया।
मक्का-मदीना होकर आया,अमृतसर में जल-पान किया।
वैष्णु देवी दर्शन किया, कैलास में जा कर ध्यान किया।
बदरी नाथ काशी तक घूमा, अमर नाथ का भी ख्याल किया
सरस्वती , यमुना भी देखी और गंगा जाय स्नान किया,
तीर्थ सभी तू घूम लिया पर, मन में बड़ा अभिमान किया।
68 तीर्थ हृदय-भीतर उनकी खोज तूं करले
तेरो जन्म-मरन मिट जांय, तूं गुरु को नाम सुमिरले।
मन के कहे .....
मन के कहे तूं करी थी भक्ति, पुण्य कर्म भी पा गया,
इन कर्मों को भोगन लैई, तू 84 में आ गया।
सेठ बना कभी राजा तो, दोनों ने ही पाप किया।
पाप कर्म भुगतान हुआ तब, नर्को में गोता खा लिया।
सत गुरु का उपदेश छोड़ कर, उल्टे मार्ग झूल गया,
रामेश्वर माया में फंसके, तू असली भक्ति भूल गया।
सब भक्ति को छोड़ कर, एक गुरु-भक्ति तूं करले।
तेरो जन्म-मरन छुट जाय, तू गुरु को नाम सुमिरले।
मन के कहे .....

❑ **रामेश्वर दास गोदारा, बड़ोपल**
**जिला फतेहबाद (हरियाणा)**
**फोन. -99921-84006**

**सूचना :-** बिश्नोई सभा कुरुक्षेत्र का 18 वां स्थापना दिवस बिश्नोई मन्दिर व धर्मशाला, कुरुक्षेत्र (नजदीक काली कम्बली) में 30 जनवरी, 2013 को धूमधाम से मनाया जायेगा। 29 जनवरी की रात्रि को गुरु जंभेश्वर भगवान के विशाल जागरण का आयोजन होगा, जिसमें समाज के प्रतिष्ठित साधु-संत व गायक कलाकार धर्म-प्रचार करेंगे। 30 जनवरी, 2013 को प्रात:विशाल हवन व पाहल होगा तत्पश्चात 11.00 बजे मुख्यकार्यक्रय होगा जिसमें समाज के में प्रमुख नेतागण व गणमान्य व्यक्ति भी भाग लेगें। **प्रधान बिश्नोई सभा,** कुरुक्षेत्र 01744-290020

# भगवान् श्री जम्भेश्वर की वाणी: ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी

भगवान् श्री कृष्ण का दिव्योपदेश (ज्ञान और भक्ति युक्त कर्मयोग शास्त्र अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीता) और भगवान् श्री जम्भेश्वर की शाश्वत वाणी (ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी) अर्थात् 'सबदवाणी' का मूल सन्देश वस्तुत: एक ही है, दोनों का विषय प्रवृत्तिमार्ग है। गीता उपनिषदों का सार तत्त्व है, 'सबदवाणी' एक विभूति की अनुभूति है। गीता की भाषा (संस्कृत) प्रबुद्ध वर्ग की है, श्रीमद्भगवद्जम्भवाणी (सबदवाणी) का संदेश जनवाणी (मरु भाषा, राजस्थानी) में है। परमगुरु भी जम्भेश्वर भगवान् ने ज्ञान, भक्ति और कर्म जैसे गूढ़ विषयों का प्रतिपादन अत्यन्त सरल, स्वाभाविक, मौलिक एवं व्यवहारिक रूप से किया है। इन्होंने निरन्तर लोकल्याणकारी 'सबदवाणी' की रचना की। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि परमगुरु श्री जम्भेश्वर महाराज ने केवल काव्य रचना के उद्देश्य से रचनाएं नहीं की, अपितु प्रसंगवश जो बात समय-समय पर इन्होंने किसी व्यक्ति विशेष अथवा जन-समूह को सुनाई, इनके वे अमर वाक्य ही स्वत: काव्यमयी, मंगलकारी, प्रवाहयुक्त एवं जन भाषा में प्रयुक्त होने के फलस्वरूप भक्त जनों के कण्ठहार बन गये, कालान्तर में परमगुरु के प्रिय भक्तों ने ही उन्हें लिपिबद्ध किया।

मध्ययुग में भारत में धर्म और सम्प्रदायों के नाम पर अनेक युद्ध होते थे। हिन्दु और मुसलमानों के संघर्ष की बात तो छोड़िये, हिन्दुओं में भी अनेक वर्ग और सम्प्रदायों के मध्य धर्म को लेकर पारस्परिक कलह होती रहती थी। हिन्दू संतों का एक वर्ग ज्ञानमार्गी कहलाता था और दूसरा वर्ग भक्तिमार्गी। ज्ञानमार्गियों का आराध्यदेव निर्गुण-निराकार था तथा ये लोग योग साधना एवं ज्ञान को ही मोक्ष का एक मात्र उपाय मानते थे। दूसरा वर्ग केवल भक्ति को ही मोक्ष का साधन मानता था, ये लोग सगुणोपासक थे। ज्ञानमार्गी और भक्तिमार्गी प्राय: पारस्परिक मतभेद और वाद-विवाद के कुपरिणाम भोगते थे। विडम्बना की बात तो यह है कि भक्तिमार्ग में भी अनेक भेदोपभेद थे, यथा-शैवमार्गी, जो केवल शिव-पूजा में ही विश्वास रखते थे तथा वैष्णव-जो भगवान विष्णु के उपासक थे। विष्णु उपासकों में भी कृष्ण-भक्त और राम-भक्त के रूप में विभेद था। कृष्णोपासक, राम की उपासना करने वालों को हेय समझते थे तो राम-भक्त, कृष्ण-भक्तों को निम्न श्रेणी के समझते थे। विष्णु के उपासक शिव साधकों पर लट्ठ बरसाते थे तो शिव-भक्त शिव बूटी चढ़ाकर विष्णु भक्तों से लोहा लेते थे। इस प्रकार भारत में धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर हिन्दू लोग पारस्परिक विद्वेष और आन्तरिक कलह के शिकार हो चुके थे।

इसी प्रकार की दूसरी लड़ाई प्रवृत्तिमार्गी और निवृत्तिमार्गियों में थी। निवृत्तिमार्गी गृह-त्याग और सन्यास को ही श्रेयस्कर मानकर टोपी पहनें, कमण्डल लिए अपने ज्ञान के मिथ्य अहंकार से अकड़कर अमचूर हुए फिरते थे, जो प्रवृत्तिमार्गियों को निश्चित रूप से कड़वे-कसायले ही लगते थे। इन सन्यासियों के भी अनेक रूप रूपान्तर थे, यथा कोई लंगोट कसे भटक रहा है तो कोई धोती लपेटे तो कुछ नंग-धड़ंग फक्कड़ लोक लाज को तजकर समाज में अपनी ही मस्ती में डोल रहे थे। कुछ लोग जट-जटा बांधकर अकड़ रहे थे और कुछ तरबूज की तरह अपना सिर मुंडाकर ही अपने लिये वैकुण्ठ का आरक्षण समझते थे। अन्य कुछ तथाकथित साधुजन राख के ढेर में लेटे हुए खर की भांति अपने स्थूल अंगों में भभूत लगाकर ही अपने लिये स्वर्ग के द्वार खुले समझते थे, उधर प्रवृत्तिमार्गी अर्थात् गृहस्थीजन मोह माया से बुरी तरह ग्रसित थे, संसार में आसक्त होकर परमात्मा को पूर्णतया भुला बैठे थे। संसार के प्रति यह घोर आसक्ति किसी नासूर के कीड़े की तरह इन्हें पीड़ा पहुंचा रही थी, फिर भी इन्हें आत्म शुद्धि की सुध कभी नहीं हुई। प्रवृत्तिमार्ग में भी आस्तिक और नास्तिक दो प्रकार के लोग थे। नास्तिक इस संसार को केवल पुरुष और स्त्री के सहवास का ही फल मानते थे। तो आस्तिक कहे जाने वालों में अधिकांश लोग धर्मभीरू थे जो पाखण्डी पण्डितों के जाल में फंस चुके थे, इनका मोक्ष पण्डितों के हाथों में था। धर्म के

नाम पर पाखण्डी पण्डितों द्वारा इनका शोषण होता था। इस प्रकार मध्य युग में भारतीय समाज हर दृष्टि से पतन की ओर तीव्र गति से अग्रसर था।

ऐसी विकट स्थिति में संसार का कल्याण करने, माया-जाल में आसक्त लोगों को आत्मज्ञान की ज्योति का दर्शन कर मोक्ष प्रदान करने एवं धर्म के नाम पर पाखण्डी पंडितों के कुचक्र में फसे धर्म-भीरूओं का उद्धार करने के लिये, परब्रह्म परमेश्वर (साक्षात् विष्णु) ने वि.सं. 1508 में भाद्रपद की (भादवा वदि अष्टमी) कृष्णाष्टमी, सोमवार को अर्द्ध रात्रि में कृत्तिका नक्षत्र में तत्कालीन मारवाड़ राज्यान्तर्गत नागौर के पीपासर गांव के तपस्वी ठाकुर लोहटजी पंवार के घर भगवान् जम्भेश्वर के रूप में प्रकट होकर हंसादेवी को मातेश्वरी का सुपद प्रदान किया।

जो ज्ञानोपदेश द्वापरयुग में भगवान् श्री कृष्ण के रूप में इन्होंने देववाणी संस्कृत में प्रसारित किया था, वही दिव्योपदेश भगवान् श्री जम्भेश्वर के रूप में इन्होंने (विष्णु ने) कलयुग में जन-वाणी के माध्यम से प्रसारित किया। भगवान श्री कृष्ण ने बाल्यावस्था में गायें चराई, बाल्यकाल एवं युवावस्था में राक्षसों का वध करके अपने दैविक व्यक्तित्व का परिचय दिया और भौतिक जीवन के उत्तरार्द्ध में उन्होंने पुरुष श्रेष्ठ अर्जुन को निमित बनाकर समस्त संसार को दिव्य ज्ञानोपदेश दिया। भगवान श्री जम्भेश्वर महाराज ने भी बाल्यकाल में गायें चराई तथा बाल्यकाल के उत्तरार्द्ध एवं युवावस्था के पूर्वार्द्ध में राक्षस-वृत्ति के लोगों को ज्ञान खड्ग से पराजित करके अपने पारलौकिक (ईश्वरीय) व्यक्तित्व का परिचय दिया। भगवान श्री जम्भेश्वर ने सत्य और अहिंसा के माध्यम से अन्याय का नाश करके चिर अनुकरणीय सिद्धान्त प्रतिपादित किये। लौकिक जीवन के उत्तरार्द्ध में इन्होंने लोकल्याणकारी शाश्वत ज्ञानोपदेश दिया जो ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी है। इस उपदेश में ज्ञान का स्वरूप और महिमा दर्शनीय है, भक्ति की महत्ता का सुन्दर प्रतिपादन है और कर्म की अनिवार्यता का निर्देश भी है। दूसरे शब्दों में भगवान श्री जम्भेश्वर की 'सबदवाणी' में भक्तियोग, ज्ञानयोग और कर्मयोग का सुसन्तुलित समन्वय सदैव अनुकरणीय है। परम गुरु श्री जम्भेश्वर भगवान् ने अपनी 'सबदवाणी' मे ज्ञान, भक्ति और कर्म को सापेक्ष सिद्ध किया है। ज्ञान के बिना सांसारिक विषयों के प्रति विरक्ति असम्भव है और विरक्ति के अभाव में भक्ति सम्भव नहीं। अतएव ज्ञान की महत्ता का श्री जम्भेश्वर महाराज ने दृढ़ता से प्रतिपादन किया और ज्ञान के पुंज (सद्गुरु) के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए इनके स्वरूप को स्पष्ट किया।

**गुरु महिमा-**

आत्म ज्ञान के लिए गुरु की अनिवार्यता स्पष्ट करते हुए परमगुरु जम्भेश्वर ने कहा-**सतगुरु है तो सहज पिछाणी** अर्थात् सतगुरु के द्वारा ही व्यक्ति अपने निज स्वरूप का बोध करने में समर्थ हो सकता है। गुरु की अनिवार्यता दर्शाने के साथ-साथ उन्होंने उन सद्गुणों का स्पष्ट उल्लेख किया है, जो गुरू में विद्यमान होने आवश्यक है। केवल ऐसे व्यक्ति को ही गुरु के रूप में धारण करना चाहिए।

**जो गुरु होयबा सहजे शीले शब्दे नादे,**
**वेदे, तिंहि गुरु का आलिंकार पिछाणी।**

अर्थात् जो गुरु स्वभावत: ही शीलवान हो, शीलवान भी शब्दों से (वचनों से), स्वर से (वह मृदु-भाषी हो, कटु वचन अथवा कड़वे शब्द नहीं कहने वाला हो)एवं ज्ञान से (तत्व ज्ञानी हो, उसका ज्ञान लोक कल्याणकारी हो अर्थात् वह ब्रह्मज्ञानी या आत्मज्ञानी) हो। वह गुरु छ: दर्शनों का ज्ञाता हो और दर्शनों का ज्ञान ही उसके स्वरूप की स्थापना करता है अर्थात् वह दर्शन-ज्ञान ही उसका शृंगार हो-

**छव दरशण जिंहि के रूपण थापण**

**भगवान जम्भेश्वर का अद्वैत : हिन्दु मुस्लिम एकता का प्रतीक**

अद्वैतवाद की पुष्टि तो अनेक भारतीय ऋषि-मुनियों ने की है किन्तु उनका वह अद्वैतवाद दार्शनिक मत तक ही सीमित है, उसका कोई लोक कल्याणकारी, व्यवहारिक रूप अथवा वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में समाजोपयोगी रूप नहीं बन सका। भगवान् जम्भेश्वर का अद्वैतवाद तत्कालीन परिस्थितियों में एवं वर्तमान संदर्भ में भी व्यावहारिक रूप से उपादेय सिद्ध हो रहा है क्योंकि वह हिन्दु-मुस्लिम एकता का प्रतीक है। जीव और ब्रह्म के विषय में दिये गये उनके उपदेशों में ब्रह्म (ईश्वर) या अल्लाह में कोई भेद नहीं है। निराकार ईश्वर अथवा परब्रह्म का जो स्वरूप है वही स्वरूप

जम्भेश्वर भगवान् ने अल्लाह का बताया है-

**अलाह अलेख अडाळ अजोनि सिंभू**

अर्थात् अल्लाह अदृश्य (अलेख-अगम-अगोचर) अर्थात् निराकार है, उसका भान पंच ज्ञानेन्द्रियों से नहीं किया जा सकता, वह ज्ञानेन्द्रियों के विषय क्षेत्र (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध) से परे हैं। अडाल अर्थात् अखण्ड है (उसकी शाखायें-प्रशाखायें अथवा अंग-विभाजन नहीं हो सकता है), वह अयोनि है-(गर्भ से पैदा नहीं होता है) उसके मां-बाप नहीं है, वह स्वयंभू है अर्थात् अपने आप ही अपना अस्तित्व रखने वाला है, निराधार है। निराकार ईश्वर का भी यही रूप भारतीय दर्शन में वर्णित है और इसी रूप की पुष्टि जम्भेश्वर भगवान् ने की है। वस्तुतः परमगुरु जम्भेश्वर ने ईश्वर और अल्लाह को एक माना है।

**संसार की नश्वरता का उपदेश -**

ज्ञान मार्ग में संसार को असार और क्षणभंगुर माना गया है। कबीर ने भी कहा है-

**कबीरा यह संसार, खिण खारा खिण मीठा।**
**काले जो बैठा माळीये, आज मसाण दीठा।**

संत कबीर ने मनुष्य को पानी का बुलबुला बताया है-

**पाणी केरा बुलबुला, ऐसी माणस केरी जात।**
**देखत ही उड़ जावेला, ज्यूं तारा प्रभात।।**

श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मा को अमर और देह को नश्वर मानती है-

**अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताःशरीरिणः।**
**अनाशिनो प्रमेयस्य तस्माद्युधयस्व भारत।।**

जगत् गुरु स्वामी शंकराचार्य ने केवल ब्रह्म को ही सत्य मानते हुए समस्त जगत् को मिथ्या माना था- ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या।

इसी गूढ़ज्ञान की भगवान् जम्भेश्वर ने अत्यन्त सहज अभिव्यक्ति की है, भाषा की सरलता, भावों की मधुराभिव्यक्ति और व्यवहारिक दृष्टान्तों की प्रस्तुति ही जम्भेश्वर महाराज की मौलिकता है। संसार को नश्वर, जगत् की समस्त माया को तथ्यहीन एवं क्षणभंगुर मानते हुए उन्होंने अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से कहा है-

**राज न भूलीलो। राजिन्द्र दुनी न बंधे मेरु।**
**पवणा झोलै बिखर जैला। धुंवर तणा जै लोरुं।**
**बोळस आभै तणा लहलोरुं।**
**आडा डम्बर केती बार बिलम्बण।।**
**ओ संसार अनेहूं।**

राजा के अहम् को मिथ्या और भ्रांत बताते हुए गुरु महाराज ने कहा हे राजन्! तू अपनी शक्ति और अपने वैभव के बल पर अपने आपको समर्थ मानने की महाभयंकर भूल कर रहा है। तेरा चित्त भ्रांत हो गया है। तू यह नहीं जानता कि पर्वतों को रज्जु के टुकड़े से नहीं बांधा जा सकता है, वे उत्तंग और विशाल हैं, उनके सम्मुख रज्जु का क्या अस्तित्व है? तू भी अपने अति अल्प ज्ञान और यत्किन्चित् अथवा नगण्य सामर्थ्य द्वारा जगत् को वशीभूत करना चाहता है और अपने आपको समस्त संसार का स्वामी मानता है, जो असम्भव एवं हास्यास्पद है। राजकीय वैभव और माया के ऐश्वर्य को तथ्यहीन तथा अस्तित्वहीन एवं क्षणभंगुर बताते हुए श्री जम्भेश्वर भगवान् ने कहा-हे राजन्! यह सब मिथ्या है, सार हीन है, तेरे ये ठाठ-बाट उसी प्रकार नष्ट हो जायेंगे जिस प्रकार हवा के किंचित् झोंके से ही कोहरे के बादल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। पानी रहित बादल (लोर) यद्यपि एक बार तो घनघोर घटा की भांति आकाश को आच्छादित कर देते हैं, परन्तु उनका अस्तित्व क्या है? वे भला कितनी देर ठहर सकेंगे? हवा के झोंके के साथ ही छिन्न-भिन्न होकर अपना अस्तित्व ही समाप्त कर देंगे। गुरु महाराज ने कहा कि इस संसार में जो भी रचा गया है वह कभी भी स्थिर नहीं रह सकता है-

**जंबू मंजे राचि न रहीबा थिरूं।**

परमगुरु महाराज जम्भेश्वर के शब्दों में भौतिक जगत् के समस्त भोग विलास और सुख वैभव उसी प्रकार तथ्यहीन या व्यर्थ हैं, जिस प्रकार की कोहरे की वर्षा-

**नदिये नीर न छीलर पाणी, धुंवर तणा जे मेहूं।**

संसार को क्षणभंगुर मानते हुए जम्भेश्वर महाराज ने अति स्पष्ट शब्दों में कहा है कि-

**पवणा झोलै बिखर जैला गैण विलंबी खेहूं।**

गुरु-महिमा, जीव और ब्रह्म की व्याख्या, संसार की नश्वरता का विचार आदि समस्त उपदेश ज्ञान का ही विवेचन है। इस प्रकार अपनी शाश्वत सबदवाणी में परमगुरु महाराज ने ज्ञान की महत्ता प्रतिपादित करते हुए स्पष्ट कहा है कि-

**ग्यान खड़ंगू जथा हाथे, कवण होयसी हमारा रिपू।**

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार -

**यथैधांसि समिद्धो ग्निर्भस्मसात्कुरूतेर्जुन।**

**ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि भस्मसात्कुरूते तथा।**

जैसे प्रज्वलित अग्नि ईन्धन को भस्ममय कर देती है, वैसे ही ज्ञान रूपी अग्नि सम्पूर्ण कर्मो को भस्ममय कर देती है। गीता का ज्ञान योग मोक्ष का दाता है तो परम गुरु जम्भेश्वर भगवान् ने भी ज्ञान को ही मोक्ष का अचूक आधार माना है। ज्ञान रूपी तलवार धारण कर लेने पर कोई भी शत्रु नहीं होंगे। यहां पर शत्रु का अभिप्राय बाह्य शत्रुओं के साथ ही- काम, क्रोध, मद, लोभ मोह आदि आन्तरिक शत्रुओं से है, जो मोक्ष के लिए बाधक होते हैं, परन्तु ज्ञान रूपी खड्ग धारण करने पर ये शत्रु निकट भी नही भटकते हैं और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इस प्रकार भगवान् श्री जम्भेश्वर की सबदवाणी में ज्ञानयोग का सहज और सुन्दर प्रतिपादन हुआ है।

**भक्तियोग**

यद्यपि ज्ञान मोक्ष का उत्तम साधन है परन्तु ज्ञानमार्ग निश्चित रूप से सहज नहीं है। गृहस्थ लोगों के लिए भक्तियोग ज्ञानयोग की अपेक्षा सुगम मार्ग है। भगवान् श्री कृष्ण ने भी सगुणोपासक भक्त को ही योगियों में अति उत्तम योगी माना है।

**मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।**
**श्रद्धया परयोपेतास्ते में युक्ततमा मताः।।**

मन को एकाग्र करके निरन्तर भगवत भजन व ध्यान में लगे हुए जो भक्तजन अतिशय श्रेष्ठ श्रद्धा से युक्त हुए सगुणरूप परमेश्वर को भजते हैं उन्हें भगवान् श्री कृष्ण भी अति श्रेष्ठ मानते हैं।

ज्ञान मस्तिष्क का विषय है और भक्ति हृदय का विषय है, ज्ञान विचार प्रधान और भक्ति श्रद्धा प्रधान है। भक्ति का आधार श्रद्धा, प्रेम और विश्वास हैं। अपने आराध्य देव अथवा इष्ट के प्रति अतिशय श्रद्धा से ही अनन्यभक्ति का बीजारोपण होता है। श्रद्धा से परिपूर्ण इसी अनन्य भक्ति की महत्ता का प्रतिपादन श्री जम्भेश्वर भगवान् ने किया है-

**विष्णु जपंत्ता जीभ जू थाकै , तो जीभड़ियां बिन सरयू।**
**हरि हरि करतां हरकत आवै, तो ना पछतावो करियो।।**

उपर्युक्त पंक्तियों में विष्णु नाम-महिमा अथवा विष्णु के जप की महिमा की महत्ता दृष्टव्य है। सगुण भक्ति हो अथवा निर्गुण-भक्ति, नाम स्मरण या जप भक्ति का प्रधान अंग है, जिसकी अनिवार्यता श्री जम्भेश्वर भगवान् ने यहां प्रकट करते हुए श्रद्धा का जो स्वरूप निर्धारित किया है। वह विशेष रूप से अनुकरणीय है। यदि विष्णु-नाम रटने से ही जिह्वा (जिभ) थक रही हो तो ऐसी जिह्वा के बिना ही काम चलाना अच्छा रहेगा। यदि हरि (विष्णु) का नाम जपते-जपते ही अथवा विष्णु का नाम जपते हुए भी कोई संकट (कष्ट) उत्पन्न होता हो तो उसका पश्चाताप नहीं करना चाहिये। वस्तुतः सच्ची भक्ति के लिए ही श्रद्धा वांछनीय है। ऐसे ही भाव मध्यकालीन संत हरजी भाटी ने प्रकट किये हैं-

**मनवा राम भण, अवरां नै ही राम भणय।**
**जां मुख राम नाम संचरै, तां मुख लोह जड़ाय।।**

भगवान् श्री कृष्ण के अनन्य भक्त महाकवि पृथ्वीराज पीथल ने भी इन्हीं भावों को प्रकारान्तर से इस प्रकार अभिव्यक्ति किया है-

**जिण दीध जनम जग, मुख दे जिह्वा,**
**किरसण जो भरण पोखण करै।**
**कहण तणौ तिणी तणौ कीरतन,**
**सरम कीधां बिनु केम सरै।।**

भगवान् श्री जम्भेश्वर ने तो जीभ की सार्थकता ही विष्णु जप से मानी है। मोक्ष का सुगम आधार विष्णु नाम के जप को माना है, इस जप के अभाव में कोई व्यक्ति भवसागर से पार नहीं उतर सकता है। **जा जन मंत्र विष्णु न जंप्यो, ते न उतरिबा पारूं।**

विष्णु जप के अभाव में जीवात्मा आवागमन के चक्र में भटकती रहेगी, उसे अनेक जन्म रूप धारण करने पडेंगे-

**जा जन मंत्र बिष्णु न जंप्यो।**
**गावें गाडर, सहरे सूवर, जळम-2 अवतारूं।।**

मोक्ष हेतु सर्वाधिक सुगम मार्ग भक्तियोग है तथा भक्ति के विभिन्न रूपों और अंगों में जप सर्वाधिक सरल और सहज विधि है। अतः गुरु महाराज के उपदेशों की व्यवहारिक दृष्टि है। दान, दया, शील सन्तोष आदि भक्ति के सहज गुण है, इसलिए भक्ति मार्ग में श्री जम्भेश्वर ने दया धर्म एवं शील व्रत की अनिवार्यता प्रतिपादित की है-

**जां-जां दया न मया ता-तां विकरम करमूं।**
**जां-जां दया न धरमूं। तां-तां विकरम करमूं।।**
**जां-जां पाळै न शीलूं। तां-तां करम कुचीलूं।।**

भक्त के लिए यह आवश्यक है कि वह अत्यन्त विनम्र और क्षमावान हो, जो बहुत ही विनम्र, बहुत ही

क्षमाशील होगा, समझो उसने भक्ति योग की साधना कर ली है। उसका तन-मन स्वच्छ हो जाता है, वह अपने निज स्वरूप को पहचान लेता है अर्थात् उसे आत्म बोध हो जाता है-

**जाकै बहुती नवणी। बहुती खंवणी।**
**बहुली क्रिया समाणी। जाकी तो निज निरमळ काया।।**

इस प्रकार परमगुरु श्री जम्भेश्वर ने मोक्ष के लिए सुगमातिसुगम भक्ति का मार्ग दर्शाया जिसमें गृह-त्याग की आवश्यकता नहीं, अपितु अपने घर-गृहस्थ के कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए ही मानव मोक्ष को सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है। इसे ही प्रवृत्तिमार्ग कहा जाता है अर्थात् परम गुरु महाराज श्री जम्भेश्वर की सबदवाणी की प्रधानता है।

**प्रवृत्ति मार्ग की पुष्टि**

श्री जम्भेश्वर भगवान ने संन्यास का नहीं अपितु गृहस्थ का पक्ष प्रबल किया है। उन्होंने अपनी सबदवाणी में कहीं भी गृह-त्याग का संकेत नहीं दिया है। उन्होंने मानव को निवृत्तिमार्ग नहीं अपितु प्रवृत्तिमार्ग का अनुगामी बनाना उचित समझा, तभी तो उन्होंने कहा-

**खरतर झोळी खरतर कंथा, कांध सहे दुख भारूं।**
**जोग तणी थे खबर न पाई, कांय तज्या घर बारूं।।**

**कर्मयोग**

प्रवृत्तिमार्ग में भक्ति और कर्म ही प्रधान है। जो लोग कर्म से विमुख होने का प्रयत्न करते हैं वे भ्रमित है, कारण कि यह संसार ही कर्म प्रधान है, इसमें कोई भी व्यक्ति एक क्षण भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता है। भगवान श्री कृष्ण ने भी यही उपदेश दिया है कि-

**न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।**
**कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।3(5)।।**

मनुष्यों से कर्मो का त्याग हो भी नहीं सकता क्योंकि कोई भी पुरुष किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किये नहीं रहता है, निःसंदेह सब ही पुरुष प्रकृति से उत्पन्न हुए गुणों द्वारा परवश हुए कर्म करते हैं।कर्म की गति गहन है, कर्म अकर्म और कुकर्म की पहचान करना अत्यन्त कठिन है। परन्तु भगवान् भी जम्भेश्वर ने कर्म का स्वरूप निश्चित करके कर्त्तव्य कर्म का अति सरल मार्ग दर्शाया है।

**कालर करसण कीयो, नेपै कछु न लीयो।**

परमगुरु महारजा ने कर्मो के अनुसार ही फल प्राप्ति का प्रावधान रखा है। जो व्यक्ति कालर (बंजर) भूमि में खेती करेगा वह उपज के रूप में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकेगा। जो जैसा बीज बोयेगा, उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा।

**अइया उत्तम खेती को को अमृत रायो।**
**को को दाख दिखायो।।**
**को को ईख उगायो। को को नींब निंबोळी।।**

कर्म के अनुसार ही फल प्राप्ति निश्चित है, इसमें गुरु अथवा ईश्वर का कोई दोष नहीं है-

**ताका फल बीज कुबीजूं, तो नीरे दोष किसायो।**

यदि बीज ही अच्छा नहीं है तो फल कड़वा होगा ही इसमें पानी का क्या दोष? पानी तो वही बरसता है, फिर भी एक लता के तो मीठा फल (तरबूज) होता है तो होता है तो दूसरी लता के कड़वा फल (इन्द्रायण) होता है, यह सब कुछ बीजों के कारण ही होता है। शुभ-अशुभ, भले-बुरे का विचार करके विवेकपूर्वक किये गये कर्म का फल स्वतः ही शुभ होगा।

**बूठो है जहां बाहिये, करषण करो सनेही खेती।।**

जहां वर्षा हुई हो वहीं पर प्रेमपूर्वक खेती करो तो अन्न का उत्पादन अवश्य होगा। गुरु महाराज द्वारा प्रवर्तित बिश्नोई सम्प्रदाय में कृषक वर्ग के लोगों का बाहुल्य है। गुरुजी ने अपने उपदेशों में कृषक जीवन से सम्बन्धित दृष्टान्त ही अधिक दिये हैं।

श्री जम्भेश्वर भगवान् ने मन, वचन और कर्म की एकरूपता पर बल देते हुए कहा है-

**पहलै किरिया आप कमाइये, तो औरां ने फरमाइये।**

शुभ कर्मो से ही व्यक्ति महान होता है और दुष्कर्मो से ही पतित होता है। भगवान् जम्भेश्वर महाराज ने जाति-पांति और ऊंच-नीच के भेद भावों में विश्वास न करके कर्म को ही प्रधान मानने का सदुपदेश दिया है-

**तइया सांसू तइया मांसूं। तइया देह दमोई।।**
**उत्तम मध्यम क्यूं जाणीजै? विवरस देखो लोई।**

हे मानव! जिसे तू निम्न समझ रहा है, उसमें भी वैसा ही रक्त प्रवाहित हो रहा है, जैसा कि तुझ में और उसमें भी वैसी ही श्वांस चल रहा है, जैसी कि तुझ में। उसका तन भी हाड़ मांस का है और तुम्हारा तन भी हाड़ मांस का ही, तो फिर उत्तम और मध्यम अथवा निम्न का भेद कैसे करते हो? इसी विषयान्तर्गत गुरु महाराज ने पुनः यह भी कहा कि-

**उत्तम कुलि का उत्तम न होयबा,**

**कारण किरिया सारूं।**

कोई भी व्यक्ति केवल उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से उच्च नहीं हो जाता है, अपितु उच्चता और निम्नता तो उसके कर्मो के अनुसार ही प्राप्त होती है। कर्म की प्रधानता को प्रतिपादित करने हेतु इससे बढ़कर अकाट्य तर्क और क्या हो सकता है? कर्म की महत्ता के इतने गूढ़ रहस्य को गुरु महाराज ने जिस सरल ढंग से समझाया है, वह नि:संदेह अनुकरणीय है। गृहस्थ धर्म, सुकर्म और शुद्ध आचरण की महत्ता प्रतिपादित करते हुए भगवान श्री जम्भेश्वर ने कहा-

**कण बिण कूकस रस विण बाकस,**
**बिण किरिया परिवार किसो?**

भगवान् श्री जम्भेश्वर ने धर्म-कर्म और आचार-विचार को प्रधानता दी परन्तु इसकी ओट में पलने वाले पाखण्ड का घोर विरोध मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए अकाट्य तर्क प्रस्तुत किया-

**धवणा धूजै पाहण पूजै, वेफरमाई खुदाई।**
**गुरु चेले के पाए लागै, देखो लोग अन्याई।।**

इस प्रकार उन्होंने पाखण्डी-पण्डितों और मुल्ले-मौलवियों को बुरी तरह आड़े हाथों लिया। यथा-

**चढ़ चढ़ भींते मड़ी मसीते, क्या उलबंग पुकारो?**
**दिल साबत हज काबो नेड़ो, क्या उलबंग पुकारो?**

गुरु जम्भेश्वर की वाणी में भक्ति, ज्ञान और कर्मयायोग की विवेचना इतनी विस्तृत है कि इनमें से प्रत्येक विषय पर पृथक रूप से ग्रन्थ रचना हो सकती है, किन्तु स्थानाभाव के कारण यहां अल्प विवरण द्वारा ही यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि गुरु महाराज की सबदवाणी में ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों का ही अति सुन्दर ढंग से, संतुलित एवं समन्वित रूप प्रतिपादित हुआ है, जो मानव मात्र के लिए सदैव मंगलकारी है।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षत: यही कहा जा सकता है कि सबदवाणी भगवान श्री जम्भेश्वर का एक ऐसा अनुपमेय शास्त्र है जिसमें एक भी शब्द सदुपदेश से रिक्त नहीं है। अत: मैं अकिंचन यहां पर अपनी अल्प बुद्धि द्वारा भगवान वेद व्यासजी के अमर वाक्य का अनुकरण करने का प्रयत्न करता हुआ सबदवाणी के विषय में यही कह कर आत्म संतोष करता हूं कि-

**सबदवाणी सुवाणी कर्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:।**
**या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनि:सृता।।**

अर्थात् परमगुरु जम्भेश्वर की सबदवाणी सुवाणी के रूप में धारण करने योग्य है। दूसरे शब्दों में श्री जम्भवाणी को भली प्रकार पढ़कर अर्थ और भाव सहित अन्त: करण में धारण कर लेना हमारा मुख्य कर्त्तव्य है, जो कि स्वयं श्री पद्नाभ विष्णु भगवान (श्री जम्भेवश्वर भगवान) के मुखारविन्द से निकली हुई है। अन्य शास्त्रों के विस्तार से अब क्या प्रयोजन है? नि:संदेह भगवान श्री जम्भेश्वर की सबदवाणी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदायिनी है।

❑ **प्रोफेसर सोनाराम बिश्नोई**
से.नि.विभागाध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधुपर(राज)
मो. 08875927553

## लेखकों, प्रकाशकों व शोधार्थियों से निवेदन

बिश्नोई समाज के पास प्राचीन साहित्य का विपुल भण्डार है जो अत्यन्त ही उच्च कोटि का है। इस साहित्य पर अधिक शोधकार्य नहीं हुआ है अत: धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास व पर्यावरण पर शोधकार्य करने वाले शोधार्थियों से निवेदन है कि वे जाम्भाणी साहित्य को अपने शोध का आधार बनाएं। इस कार्य में जांभाणी साहित्य अकादमी आपका हर संभव सहयोग करेगी। आजकल कुछ सज्जन पूर्व में प्रकाशित जांभाणी साहित्य को अपने नाम से प्रकाशित कर रहे हैं जो अच्छी बात नहीं है। ज्ञात रहे यह एक कानूनी अपराध है। हाल ही में श्री पृथ्वी सिंह बैनिवाल के चालीसे और आरतियों को एक सज्जन ने अपने नाम से छपवा दिया, जिससे उसे कानूनी नोटिस का सामना करना पड़ा और क्षमा याचना करनी पड़ी। इससे सामाजिक समरसता पर प्रभाव पड़ता है और साहित्यकारों की विश्वसनीयता कम होती है। कृपया ऐसा न करें। यदि आपको साहित्य से प्रेम है और लेखन में गति नहीं है तो किसी दूसरे रूप में साहित्य की सेवा करें।

❑ **स्वामी कृष्णानंद आचार्य,** अध्यक्ष
जांभाणी साहित्य अकादमी

## नए वर्ष का अभिनन्दन

नए वर्ष का अभिनन्दन है, गर्म जोशी के साथ।
स्वागत में सब खड़े हुए हैं, पुष्प-माला लिए हाथ।।
खट्टी मीठी यादें छोड़ी, बीते वर्ष से हुई जुदाई।
गया वक्त नहीं लौट के आता, नेकी करलो भाई।।
नए वर्ष में घर-घर होए, खुशियों की वर्षात।
मंगलमय शुभ कामनायें हैं, प्रेम की मिले सौगात।।
बैमनस्ता को छोड़ बढ़े, आपस में भाई चारा।
समृद्ध और शक्तिशाली हो, भारत देश हमारा।।
भिन्न-भिन्न भाषाये यहां की, भिन्न-भिन्न पहनावा।
अनेकता में एकता यहां, यह दुनिया को दिखलाया।।
कभी दिवाली गुरु-पर्व कभी क्रिम-मिस और रमजान।
मिल जुल कर सब खुशियां बांटे यह हमारी पहचान।।
बहुत बड़ा है देश हमारा, कहीं पर्वत कहीं सागर लहरें।
प्रगति पथ पर बढते जायेंगे, स्वपन हैं सुनहरे।।
जीव रक्षा बिश्नोई सभा की बिनती बारम्बार।
वृक्ष लगाओ जीव बचाओ, पर्यावरण सुधार।।
भ्रष्टाचार दुष्कर्म तजो, भारत के बहनों भाई।
नए वर्ष का अभिनन्दन है, सबको बहुत बधाई।।

❑ हेतराम बिश्नोई
राष्ट्रीय महासचिव, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा
अबोहर, पंजाब।

## नववर्ष.....

बीत चला जो वर्ष उसे है नमन हमारा,
कटु मधुर स्मृति के मध्य दु:खद है अन्त तुम्हारा
भले बुरे जैसे भी रहे तुमको नमन हमारा।।
सम्पति सुख समृद्धि भी, झोली लाता है
क्यों मन ऐसा कहता है जब नया साल आता है।
स्वागत है नववर्ष भरी खुशियों ने झोली
''नित नये उत्सव दिवस हो तेरे,
हर्ष-पूरित दिन रात हो सबके घनेरे।
प्यारा ममता का सभी पीयूष पीवें,
कर रहा ''ऋषि'' यह विनती सवेरे''।।

❑ ऋषि राम बिश्नोई
मुरादाबाद (उ.प्र), 94125-80649

## स्वागत तेरा नववर्ष है

आगमन पर तेरे जन-जन के मन में हर्ष है,
सूर्य अपनी उष्मा धरती को है दे रहा,
चांद अपनी चांदनी को नेह को भिगो रहा,
तारे सलाम कर रहे चहुं और जैसे पर्व है,
स्वगत तेरा नववर्ष है.....।।
नेह का अनुबंध सृष्टि का अध्याय है,
इंसान की इंसानियत भी प्रेम का पर्याय है,
प्रेम से ही जिन्दगी है, प्रेम से उत्कर्ष है,
स्वगत तेरा नववर्ष है.....।।
पर्वतों की अलसाई और चुपके से कुछ कह रही,
लग रहा ज्यों प्रकृति-दुल्हन अंगडाई ले उठ रही,
पवन करें अठखेलियां, ज्यो रच रहा नवसर्ग है,
स्वागत तेरा नववर्ष है.....।।

❑ रमा द्विवेदी

## च वत चलता रहता है

सदियों के इस मेले में
एक वर्ष की क्या बिसात,
प्रचण्ड अग्नि की लपटों में
जीवन जलता रहता है।

समय जो बीत रहा है,
वह लौट नहीं पाएगा,
अन्त आखिर होना ही है,
दिन ढ़लता रहता है।

बीत गया जो वर्ष
वह दे गया आशीष,
नव प्रभात सुखद रहे,
सपना पलना रहता है।

❑ अनुपमा पाठक

# गुरू जाम्भो जी की वाणी में युगबोध

उत्तर भारत का भक्ति आन्दोलन मध्ययुग की एक महान सांस्कृतिक घटना है और भक्तिकाव्य इस भक्ति आन्दोलन की उतनी ही महत्वपूर्ण देन है। उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन मुख्य रूप से दो धाराओं के साथ हमारे सामने आया-निर्गुण एवं सगुण। निर्गुण धारा के तहत सृष्टि के निर्माणकर्त्ता के रूप में एक ईश्वर की बात कही गई थी, जो सर्वव्यापक निर्गुण निराकार और घट-घट में व्याप्त था। सगुण भक्ति के अन्तर्गत हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुरूप उनके देवी-देवताओं की साकार रूप में प्रतिष्ठा की गई। निर्गुण धारा में मुख्य संत कबीर, गुरु जांभोजी, जायसी, रैदास थे, तो सगुण धारा में सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई आदि ने अपनी अविस्मरणीय उपस्थिति दर्ज करवाई।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल को चार मुख्य धाराओं में विभक्त किया, सगुण भक्ति शाखा के अन्तर्गत दो धाराएं रामभक्ति शाखा एवं कृष्ण भक्तिशाखा तथा निर्गुण भक्ति धारा के अन्तर्गत ज्ञानाश्रयीशाखा एवं प्रेमाश्रयी शाखा। आचार्य शुक्ल के द्वारा किया गया काल विभाजन एवं नामकरण हिन्दी साहित्य में छिटपुट विवाद को छोड़कर सर्वमान्य है और इस विभाजन के आधार पर गुरु जांभोजी का स्थान ज्ञानाश्रयी शाखा में पाया जाता है।

गुरु जांभोजी की वाणी धर्म और केन्द्रीयता के बावजूद महज पूजापाठ, ध्यान उपासना और उनके माध्यम से इस लोक के दु:खों से मोक्ष पाते हुए परलोक में सुख भोगने का सन्देश और प्रेरणा देने वाला काव्य मात्र नहीं है अपितु धर्म और भक्ति के आवरण में वह सामाजिक अन्याय के विरोध में और मानवीय न्याय के पक्ष में एक उन्नत मानवीय समाज और एक उन्नत मूल्य व्यवस्था के पक्ष में खड़ा होने और उसके लिए संघर्ष करने वाली वाणी है।

गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी के माध्यम से एक अत्यन्त ही शिष्ट समाज की स्थापना की। तत्कालीन समाज की सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियां अत्यन्त दयनीय थी और राजपूताने की समस्त जातियाँ पतन की ओर अग्रसर थी ऐसी विपन्न स्थितियों में गुरु जांभोजी ने सभी जातियों को अहिंसा के रास्ते पर चलाते हुए जीने की एक नई राह दिखाई जिसका नाम था 'बिश्नोई पंथ' । तत्कालीन सामन्तों की मारकाट एवं हिंसा के बीच गुरु जांभोजी के सिद्धान्त संजीवनी बूटि के समान थे।

गुरु जांभोजी की वाणी अपने युग का सच्चा दस्तावेज है। श्रीमती बासन्ती पन्त के अनुसार "कोई भी रचनाकार समकालीन जीवन और चतुर्दिक परिवेश के अनुभवों से चेतना के स्तर पर जिस जागरूक चिन्तन को जन्म देता है अन्तत: वही बोध है यही बोध युग जीवन की सम्पृष्टि और समादृष्टि के कारण युगबोध का अभिधान पाता है।"(1)

राजस्थान में निर्गुण धारा के प्रमुख गुरु जांभोजी ने इसी धर्म का पालन करते हुए समकालीन जीवन और अपने आसपास के समस्त परिवेश के अनुभवों से चेतना के स्तर पर एक व्यापक विश्वस्तरीय जागरूक चिन्तन को जन्म दिया है, यही जागरूक चिन्तन जम्भवाणी में युगबोध को प्रकट करता है, ऐसी मेरी धारणा है।

प्रत्येक युग की अपनी दृष्टि होती है और उसी दृष्टि के आधार पर व्यक्ति अपने लिए मानदण्ड स्थापित करता है। युगबोध से निरपेक्ष होकर कोई भी रचनाकार रचना नहीं कर सकता, रचना के मूल में इतिहास और जीवन, परिवेश और वातावरण तथा परम्परा व प्रगति की नई भंगिमांए सदैव क्रियाशील रहती है। युगबोध से कटकर रचना का कोई स्वरूप नहीं होता। डॉ. सुषमा अग्रवाल के अनुसार -"सृजन यदि अपने समकालीन परिवेश से आँखे चुरा लेता है तो वह न तो जीवन और यथार्थ बन पाता है और न उसका प्रभाव स्थायी होकर किन्हीं मूल्यों को उत्प्रेरित करता है।"(2)

सामाजिक चेतना सम्पन्न श्री जांभोजी ने समकालीन समाज की उन सभी जड़ मान्यताओं, जो समाज की प्रगति, समृद्धि और स्वस्थ विकास में बाधक थी, का विरोध करते हुए एक नवीन विकासोन्मुख समाज (बिश्नोई) का निर्माण कर विपन्न राजनीतिक स्थिति से त्रस्त जनता को एक महत्वपूर्ण मंच दिया। गुरु जांभोजी ने अपनी सबदवाणी में तत्कालीन समाज में फैली रूढ़ियों एवं आडम्बरों का सुन्दर चित्रण करते हुए उनका विरोध भी किया है। सबदवाणी में आए युगबोध के कुछ उदाहरण

द्रष्टव्य हैं। तत्कालीन समाज में मूर्तिपूजा ने अत्यन्त ही विकराल रूप ले लिया था जिसके लिए केवल गुरु जांभोजी ने ही नहीं बल्कि कबीर आदि सभी निर्गुण सन्तों ने विरोध किया। निर्गुण संतों के काव्य में अधिकांश स्थानों पर खंडनात्मक प्रवृति ही दिखाई पड़ती है। व्यक्ति मनुष्य की अनदेखी कर पत्थर की पूजा करता है गुरु जांभोजी ने मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए कहा है-

**''पाहन प्रीत फिटाकर प्राणी, गुरू बिना मुक्त न जाई। पाहन नाऊं लोहा सक्ता, नुगरा चीन्हत कांई।।" (3)**

तत्कालीन समाज में धार्मिक आडम्बरों एवं कुरीतियों के बीच फंसकर आम व्यक्ति आलसी और कर्महीन हो गए थे परन्तु गुरु जांभोजी ने लोगों को सन्देश देते हुए कहा कि भगवान का नाम तो हृदय से जपते रहो और हाथों से कर्म करो अर्थात् कर्मवादी बनने को प्रेरित किया-

**"हिरदै नाम विष्णु को जंपो, हाथे करो टवाई।"(4)**

इतना ही नहीं गुरु जांभोजी के समाज में धार्मिक गुरु आम जनता पर बहुत ही हावी थे, ये धर्म के ठेकेदार भोली-भाली जनता को ठगने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते थे, गुरु जांभोजी ने ऐसे लोगों से ध्यान हटाकर सही रास्ते पर चलने को कहा-

**''काजी मुल्ला पढ़िया पण्डित निन्दा करे गिंवारा। दोजख छोड़ भिस्त जें चाहो, तो कहिया करो हमारा।।(5)**

गुरु जांभोजी के समय में शिक्षा का स्तर नगण्य था, समाज में पढ़ने लिखने का अधिकार केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग तक सीमित था। बच्चों को शिक्षा तो दूर जन्म लेने से पहले ही उनके कार्य भी तय कर दिये जाते थे और ज्यादातर तो पुत्र होने की ही कामना की जाती थी-

**''इहि कलयुग में दोयजन भूला, एक पिता एक माई। बाप जाणैं मेरे हलियो टोरै, कोहर सींचन जाई।।"(6)**

इतना ही नहीं बहू के घर में प्रवेश करने पर गाँव की औरतों के द्वारा गाए जाने वाले गीतों और व्यवहारों का चित्रण भी सबदवाणी में किया गया है-

**माय जाणै मेरे बहुटल आवै, बाजे बिरध बधाई।(7)**

समाज में साधुओं की स्थिति अच्छी नहीं थी वे आडम्बरों और पाखण्डों को बढ़ावा देने में लगे हुए थे। अन्य भक्तिकालीन संतों की तरह गुरु जांभोजी की दृष्टि से भी ऐसे तथाकथित लोग बच नहीं पाए हैं-

**"मूंड मुंडायो मन न मुंडायो, मूंहि अबखल दिल लोभी। अन्दर दया नही सुरकाने, निंदरा हड़ै कसोभी।।"(8)**

**''ब्राह्मण नाऊं लादण रूड़ा, बूता नाऊं कूता। वै अपहाने पोह बतावै, बैर जगावै सूता।।''(9)**

सामान्य जनता विभिन्न प्रकार के धार्मिक एवं सामाजिक आडम्बरों के मकड़जाल में जकड़ी हुई थी। जनता को उलझाने के लिए धर्म के ठेकेदार ये लोग तरह-तरह के भ्रम पैदा करते थे, इनमें से एक प्रमुख है, भूत का डर। गुरु जांभोजी ने इस डर को हमेशा के लिए मिटाने का प्रयास किया परन्तु बड़ी विडम्बना दिखाई देती है कि आज 21वीं सदी में भी ऐसे उदाहरण मौजूद हे। ऐसे लोगों का जिक्र भी जांभोजी ने अपनी शब्दवाणी में सहज रूप से किया है-

**"भूत परेती जाखा खाणी, यह पाखण्डी परवाणों। बल- बल कूकस कांय दलीजै, जामैं कणू न दाणूं।।"(10)**

समाजिक एवं राजनैतिक अस्थिरता के इस दौर में आम आदमी की मानसिकता का तो कहना ही क्या वह इतना अस्थिर हो चुका था कि घर के सारे काम काज छोड़कर तीर्थ व्रत की ओर शांति खोजने का प्रयास करने लगा था। ऐसे लोगों को सांत्वना प्रदान करते हुए गुरु जांभोजी ने एक नवीन तीर्थ स्थल का रास्ता उन्हें दिखा दिया-

**"अड़सठ तीरथ हिरदै भीतर, बाहर लोका चारूं। नान्हीं मोटी जीया जूणी, एति सास फुरंते सारूं।"(11)**

अर्थात् सारे तीर्थ तो व्यक्ति के हृदय में ही है बाहर तो केवल लोग दिखावा ही है। तत्कालीन समाज में अनेक जातियां मांसाहारी थी, वे निरीह जीवों का वध कर मांस खाते थे इसका चित्रण तो अनेक शब्दों में मिलता है-

**सुणरे काजी सुणरे मुल्ला, सुणरे बकर कसाई। किणरी थरपी छाली रोसो, किणरी गाडर गाई।। (12)**

इतना ही नहीं उन्होने तो जीव हत्या करने वालों को ये भी कहा कि अगर तुम्हारे शरीर में एक कांटा भी चुभ जाए तो कितना कष्टदायक होता है, इसी शब्द की पंक्ति-

**सूल चुभीजै करक दुहैली, तो है है जाई जीव न घाई। चर फिर आवै सहज दुहावै, तिसका खीर हलाली।।**

समाज चार वर्णो में विभक्त था (ब्राह्मण,क्षत्रिय वैश्य, शूद्र) और चारों वर्णो में अत्यधिक जटिलता थी। शूद्र वर्ग का जीवन तो नरक से भी बदतर था, ऐसे समय का पता भी गुरु जाम्भोजी के अनेक शब्दों से

मिलता है। उन्होंने ऐसी व्यवस्था पर प्रहार करते हुए लिखा भी है-कि केवल बड़े घर में जन्म लेने से कुलीन नहीं होता कुलीन तो कर्म से होता है -

**''घणा दिना का बड़ा न कहिबा, बड़ा न लंघिबा पारूं।**
**उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरया सारूं।**
**गोरख दीठा सिद्ध न होयबा, पोह उतरबा पारूं।''(13)**

समाज में दान दक्षिणा का बड़ा ही महत्व समझा जाता था। राजस्थान की प्रकृति वैसे भी मरूस्थली एवं बंजर थी। उस पर कभी खेती बाड़ी होती तो अधिकांश भाग राजा लगान के रूप में ले जाते ऊपर से बची खुची कसर धर्म के ठेकेदार दान पुण्य के रूप में भोली-भाली जनता को ठगकर ले लेते। गुरु जाम्भो जी ने सावधान करते हुए कुपात्र को दान न देने का उपदेश दिया है-

**"कुपातर कूं दान जू दीयों, रैण अंधेरी चोर ज लियो।**
**कोड़ गऊ जे तीरथ दानों, पंच लाख तुरंगम दानों।।"(14)**

सच्ची वाणी अपने समय एवं युग से असम्पृक्त नहीं होती है। अपने युग की स्थितियों का बोध रचनाकार को निरन्तर प्रेरणा प्रदान करता रहता है और इसी अनुभूति की अभिव्यक्ति है सबदवाणी अनुभूति की प्रामाणिकता पर बल देने के कारण रचयिता अपने परिवेश से निरन्तर अनुभव एकत्र करते रहते हैं।

भक्तिकालीन काव्य के दौरान अब तक की चर्चा में हम लगातार जिस बात को रेखांकित करते आए हैं और जो वस्तुत: हमारी चर्चा का केन्द्र बिन्दु रही है कि गुरु जांभोजी की वाणी (सबदवाणी) पूजापाठ एवं कर्मकाण्डों का विरोध करते हुए लोक के दु:खों से मोक्ष पाते हुए भक्ति के आवरण में सामाजिक अन्याय और पर्यावरण प्रदूषण तथा हिंसा के विरोध में मानवीय न्याय के पक्ष में उन्नत मानवीय समाज और एक उन्नत मूल्य व्यवस्था के पक्ष में संघर्ष करने वाली वाणी है। यह अपने युग को पूरी तरह से अभिव्यक्ति प्रदान करने में समर्थ है।

गुरु जांभोजी की सबदवाणी की भाषा मूलत: तो राजस्थानी ही है परन्तु तत्कालीन समय में प्रचलित पंजाबी, उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत, ब्रज, अवधी आदि अनेकों भाषाओ के शब्द सबदवाणी में मौजूद है, जो उनकी भ्रमणशीलता और भाषाई सजगता का परिचय देने में पूर्णत: सक्षम हैं जैसे-

खर, श्वान, काठ, खगा, हस्ती, नीर, कंचन (संस्कृत), मोरा, पालत, लागत, खावत, बाजत, रोवत, सोवत, जागत (ब्रज, अवधी) रूह, कफिर, कुफर, (ऊर्दू) कुडी, मुंडा, परचे, रब्बा, मुंडिया(पंजाबी) आदि। इतना ही नहीं लोक में प्रचलित लोकोक्ति मुहावरे तथा उलटबांसियों का प्रयोग तत्कालीन समाज की काव्य चेतना का परिचय देते हैं एक उलटबांसी-

**''गुरू चेले के पाएं लागै, देखो लोग अन्यायी।''(15)**

निष्कर्ष रूप में हम यही कहेंगे कि तत्कालीन युग की प्रत्येक धड़कन को गुरु जांभोजी ने सबदावाणी में संजोया है। सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ तत्कालीन युग में प्रचलित धार्मिक रूढ़ियों का विरोध कर एक नया रास्ता दिखाया जो 525 वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारा पथ प्रदर्शन कर रहा है।

**सन्दर्भ सूची** -


1 श्रीमती बसन्ती पन्त - हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना और युगबोध- पृ॰ 108

2 डॉ॰ राधा गिरीधारी - राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज - 105

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3 | सबदवाणी | सबद संख्या | 97 |
| 4 | सबदवाणी | सबद संख्या | 97 |
| 5 | सबदवाणी | सबद संख्या | 94 |
| 6 | सबदवाणी | सबद संख्या | 85 |
| 7 | सबदवाणी | सबद संख्या | 85 |
| 8 | सबदवाणी | सबद संख्या | 84 |
| 9 | सबदवाणी | सबद संख्या | 71 |
| 10 | सबदवाणी | सबद संख्या | 71 |
| 11 | सबदवाणी | सबदसंख्या | 3 |
| 12 | सबदवाणी | सबद संख्या | 8 |
| 13 | सबदवाणी | सबद संख्या | 26 |
| 14 | सबदवाणी | सबद संख्या | 32 |
| 15 | सबदवाणी | सबद संख्या | 71 |



❑ **डॉ॰ मनमोहन लटियाल**

वरिष्ठ अध्यापक हिन्दी, राज. सर्वोदय बाल विद्यालय,नारायणा, नई दिल्ली-110028,

मो. 9999206695

# बधाई संदेश

सुप्रतिष्ठित कानूनविद् श्री विजय बिश्नोई सुपुत्र श्री रामनारायण बिश्नोई (पूर्व उपाध्यक्ष राज. विधानसभा) निवासी 79, फस्ट पोलो, पाऊटा, जोधपुर की नियुक्ति राजस्थान उच्च न्यायल में न्यायधीश के पद पर हुई है। आप सन् 1989 से जोधपुर उच्च न्यायल में वकालत कर रहे है। आप पंचायत राज विभाग राज., जोधपुर विश्वविद्यालय, विद्युत वितरण निगम (राज.), राज्य कृषि मार्केटिंग बोर्ड, यूको. बैंक, भारत पेट्रोलियम कॉर्पो. लि. आदि अनके संस्थाओं के अधिवक्ता पैनल में कार्य कर चुके हैं। श्री बिश्नोई विख्यात कानूनविद् होने के साथ-साथ एक मिलनसार व्यक्ति व समर्पित समाज सेवी है। आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर अमर-ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई। हम गुरु महाराज से प्रार्थना करते हैं कि आप अपने क्षेत्र में यश व प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुए आगे बढ़े।

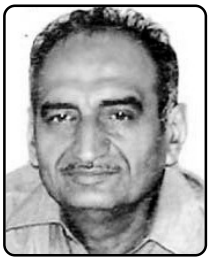

श्री सुजाना राम खिचड़ निवासी गांव बलाना, तह. सांचोर, जिला जालौर, की पदोन्नति जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग हरियाणा में मुख्य अभियंता (Chief Engineer) के पद पर हुई है। आप एक बहुत ही कर्मठ व ईमानदार अधिकारी के रूप में विख्यात है। आप समाज सेवा में विशेष रूचि रखते हैं । आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर अमर-ज्योति पत्रिका व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई। हम गुरु महाराज से प्रार्थना करते है कि आप अपने क्षेत्र में दिन दुगनी व रात चौगुनी उन्नति करें।

श्रीमती सुमित्रा बिश्नोई धर्मपत्नी श्री धर्मपाल निवासी मकान न. 24 पालभादू, रावतसर, जिला हनुमानगढ़ (राज.) की राजस्थान लोक सेवा आयोग के माध्यम से प्रशासनिक सेवा में तहसीलदार के पद पर नियुक्ति हुई है। आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धी के लिए अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी सिया बिश्नोई सुपुत्री चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई सांसद को नियुक्ति हरियाणा की बास्केटबाल टीम (Under-14) का कप्तान नियुक्त किया गया है। इनका चयन सोनीपत स्थित गेटवे इंटरनैशनल स्कूल में 22से 28 नवम्बर तक चली राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में ए.आई. ओ. स्पोर्ट्स क्लब द्वारा किया गया । सिया बिश्नोई के नेतृत्व में हरियाणा की टीम ने महाराष्ट्र के वारणा नगर में आयोजित 58वीं नेशनल बास्केटबॉल चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता।अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई।

कुमारी अर्पणा सुपुत्री श्री रामाशंकर बिश्नोई निवासी सोनकेडी, त. हरसूद, जिला खंडवा, म.प्र. ने कुश्ती में मध्यप्रदेश कुश्ती का प्रसिद्ध मानसर महिला केसरी का खिताब जीता है। आप एक राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी है। आप अब तक 13 राष्ट्रीय स्तर की और 11 राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त कर चुकी हैं। आपने रीवा में आयोजित सीनियर स्टेट चैंपियनशीप में रजत पदक व जुनियर स्टेट चैंपियनशीप में ताम्र पदक प्राप्त किया है। आपने ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी चैंपियनशीप में भी पांचवा स्थान प्राप्त किया है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई।

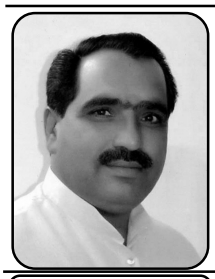

कुमारी तमन्ना बिश्नोई सुपुत्री श्री अशोक कुमार मांझू निवासी कुरूक्षेत्र (हरि.) ने उडीसा के नयागढ़ में आयोजित 7th National ASH-TE-DO Champinship 2012 में पदकला में द्वितीय व हस्तकला में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई



श्री लक्ष्मीनारायण पंवार सुपुत्र श्री मनोहरलाल पंवार निवासी गांव जामली, जिला हरदा (मध्यप्रदेश) हरदा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चयन हुआ है। आप राजनेता होने के साथ-साथ एक समर्पित समाजसेवी भी हैं। बहुत कम बिश्नोई आबादी वाले क्षेत्र में उक्त पद पर चयनित होना उल्लेखनीय उपलब्धि है, जिसके लिए बिश्नोई सभा हिसार व अमर-ज्योति आपको हार्दिक बधाई देती है तथा उज्ज्वल राजनीतिक भविष्य की कामना करती है।

डॉ. सत्यपाल बिश्नोई सुपुत्र श्री दयाल सिंह बैनिवाल निवासी बुर्ज भंगू जिला सिरसा ने चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा से अंग्रेजी विषय में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। वर्तमान में आप राजकीय महाविद्यालय सिरसा में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुलदीप कुमार सुपुत्र श्री कृष्ण कुमार धारनियां (से.नि. उप कलेक्टर) निवासी सिरसा ने भारतीय प्रबन्धक संस्थान लखनऊ से एम.बी.ए. की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात 11 लाख रूपए वार्षिक पै[illegible]nk Mumbai में प्रबन्धक के पद पर नियुक्ति प्राप्त की है। आपकी [illegible]लब्धी के लिए अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार क[illegible]धाई।

श्रुति बिश्नोई सुपुत्री श्री [illegible]ई निवासी मुरादाबाद (उ.प्र.) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग [illegible] राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) FORENSIC SCIENCE [illegible]। आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

संदीप बिश्नोई सुपुत्र श्री सुशील कुमार मांझु निवासी गांव बड़ोपल, जिला फतेहाबाद, हरि. ने उडीसा के नयागढ़ में आयोजित 7th National ASH-TE-DO Champinship 2012 में पदकला में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई

**भूल सुधार - दिसम्बर, 2012 की अमर-ज्योति के पृष्ठ 30 पर जांभाणी साहित्य अकादमी के दान दाताओं की सूची प्रकाशित है जिसमें भूल से जोधपुर के पूर्व सांसद श्री जसवंत सिंह बिश्नोई का नाम छूट गया है। श्री जसवंत सिंह जी ने अकादमी भवन की एक मंजिल पर खर्च होने वाली राशि का भार उठाने की घोषणा की थी। अकादमी उनका धन्यवाद करती है।**

# हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता और अमर-ज्योति

भारत में पत्रकारिता आधुनिक युग के पुनर्जागरणकाल की देन है। सर्वप्रथम हिन्दी में प्रकाशित पहला साप्ताहिक पत्र '**उदन्तमार्तण्ड**' 30 मई, सन् 1826 में कलकत्ता से श्री युगलकिशोर शुक्ल के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ। धीरे-धीरे पत्रकारिता के चरण भारत के अन्य प्रान्तों में प्रसारित हुए। हरियाणा प्रदेश इसका अपवाद नहीं है। हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में हरियाणा प्रदेश भी अग्रणी रहा है। पत्रकारिता के विकास में हरियाणा का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। यह योगदान दो प्रकार का है- एक तो वे पत्रकार जो जन्मना हरियाणा के थे। उन्होंने भारत के अन्य प्रान्तों में भाषा और साहित्य में पत्रकारिता का विकास किया, दूसरे जिन्होंने हरियाणा में ही रहकर हिन्दी पत्रकारिता के विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता का युग विभाजन प्रमुखत: भारत की स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद दो युगों में विभाजित किया जा सकता है। हरियाणा प्रदेश ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त प्राचीन है, जिसके विषय में एक शिलालेख है -'**देशोऽस्ति हरियाणाख्य: पृथिव्यां स्वर्ग:**' अर्थात् धरती पर हरियाणा नाम का एक प्रदेश है, जो स्वर्ग के समान है। राजनीतिक दृष्टि से भाषायी आधार पर हरियाणा राज्य की स्थापना 1 नवम्बर, सन् 1966 में हुई।

सर्वप्रथम जो ऐतिहासिक साक्ष्य मिलता है। उसके अनुसार हरियाणा प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता का श्रीगणेश झज्जर से प्रकाशित '**हरियाणा पंच**' 20 फरवरी सन् 1884 से माना जाता है। इसके प्रकाशक गुलाम अहमद खां थे। कालांतर में इसका नामकरण '**हरियाणा अखबार**' हो गया। तत्पश्चात् सन् 1884 में ही '**जैन प्रकाश**' मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। बाबू बालमुकुन्द गुप्त हरियाणा प्रदेश के गुड़ियानी गांव में उत्पन्न हुए थे। वे केवल हरियाणा प्रदेश की पत्रकारिता के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश की पत्रकारिता के एक महान स्तम्भ थे। गुप्त जी हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका '**भारतमित्र**' के प्रधान सम्पादक भी थे। वे कवि होने के साथ-साथ हिन्दी के एक बड़े गद्य निर्माता भी थे, जिसका उदाहरण उनका 'शिवशंभु का चिट्ठा' है।

स्वनामधन्य हरियाणा प्रदेश के कुंगड़ निवासी पं. माधवप्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य की एक महान विभूति थे। उनकी बहुत बड़ी ग्रथांवली का संपादन डॉ. जयनाथ बिश्नोई ने किया था, जो हरियाणा साहित्य अकादमी से छपी है। उन्होंने पहले '**वैश्योपकारक**' पत्र का सफलतापूर्वक संपादन किया। तदुपरान्त '**सुदर्शन**' पत्र के सम्पादक के रूप में अभूतपूर्व कीति अर्जित की। हरियाणा के प्रसिद्ध साहित्यकार-पत्रकार केशवा नन्द ममगाई ने हरियाणा प्रदेश से प्रकाशित होने वाले हिन्दी के साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र-पत्रिकाओं की सूची इस प्रकार प्रस्तुत की है। '**ज्योतिष मार्त्तंड**', '**ब्राह्मण समाचार**', '**ज्योतिष समाचार**', '**मेड़ प्रभाकर**,'**अहीर हितैषी**',**हरियाणा संघ**'**ग्राम सेवक**', '**कायाकल्प**', '**धर्मक्षेत्र**', '**राष्ट्रवादी पत्र सेवक**', '**विश्वव्यापी सनातन धर्म**', '**प्रयाग**', '**नवप्रयास**', '**तरुण प्रयास**', '**ज्ञानोदय**', '**आर्य**', '**हरियाणा सन्देश**', ' **कृष्ण सन्देश**', '**जन्मभूमि**', '**अमर ज्योति**','**सुधारक**','**हरियाणा निर्माण**','**दहशत**', '**हरियाणा लीडर**', '**अम्बाला टाइम्स**', '**जागता इंसान**','**हरियाणा भूमि**','**राजधर्म**','**आदर्श पथ**', '**भिवानी पत्रिका**', '**हरियाणा कांग्रेस पत्रिका**', '**अपराध जगत**', '**राष्ट्र विस्तार**', '**जन केसरी**', '**सर्वहितकारी**', '**कुरुक्षेत्र टाइम्स**', '**नीलांजना**', '**सिरसा वाणी**', '**हक़परस्त**', '**नवनाद**', '**गदर**', '**कुरुवाणी**', '**मूरख**', '**कलादीप**', '**हमारी मांग**', '**आत्मविश्लेषण**','**सत्यभामा**','**आगमन**','**तोशाम केसरी**', '**मारकंडा टाइम्स**', '**बैकवर्ड तिलक**', '**कुरुशंख**', '**विचार जागृति**', '**हरियाणा रिपोर्टर**', '**चमन**', '**रोशन सवेरा**', '**अपराध नज़र**', '**अभिन्न राष्ट्रीय तेज़**', '**सान्ध्य तारा**', '**श्रम का पसीना**', '**खिलते कमल**', '**यूनिवर्सल कवरेज**', '**यशबाबू**', '**समता लीडर**', '**ज्योति कण**', '**हरियाणा बुलंद**', '**गोल्डन भारत**', '**करनाल जाट दर्शन**', '**सिरसा बोध**', '**शिवालिक संवाद**', '**हिन्दू उजाला**', '**हरियाणा मीडिया**', '**धड़कती कलम**', '**दैनिक हिन्द टाइम्स**', '**हरियाणा अबतक**', '**अरावली टाइम्स**',

**'रवीन्द्र ज्योति', 'पिछड़ा वर्ग', 'युवा संसार', 'मोहभंग', 'चट्टान', 'गीत ज्योति', 'पृथ्वेश्वर टाइम्स', 'ज्ञान दान'** आदि अखबार निकले।

सन् 1950 के दशक में श्री पं. रविदत्त वशिष्ठ के संस्थापकत्व में और पं. देवव्रत वशिष्ठ के सम्पादकत्व में भिवानी से **'चेतना'** साप्ताहिक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। आजकल यह दैनिक चेतना के रूप में भी प्रकाशित हो रहा है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध हिन्दी के गौरव, भारत के प्रथम कहानी लेखक डॉ. महाराज कृष्ण जैन के संपादन में सन् 1971 में **'रूपाम्बरा'** मासिक पत्रिका एक पृष्ठ में सूचनाओं तथा नए रचनाकारों के परिचय से प्रारंभ हुई। उसके बाद इसका नामकरण **'तारिका'** हुआ और फिर **'शुभ तारिका'** के नाम से तो यह पत्रिका देश-विदेश में अपनी पहचान बना चुकी है। सन् 1980 से आज तक हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाली, हरियाणा साहित्य अकादमी से लाला देश बन्धु पत्रकारिता सम्मान से विभूषित विविध विधाओं पर सफलतापूर्वक लिखने वाली सुप्रसिद्ध महिला साहित्यकार श्री उर्मिकृष्ण जी **'शुभ तारिका'** पत्रिका का सफल संपादन कर रही हैं। इस पत्रिका के अनेक विशेषांक निकल चुके हैं। साल में लगभग एक अंक 'हरियाणा अंक' भी छप रहा है।

हरियाणा एक कृषि प्रधान राज्य है। इसके कृषि विश्वविद्यालय हिसार से **'हरियाणा खेती'** मासिक, **'सामुदायिक खेती'** (हिसार) **'उद्यान पत्रिका'** (कैथल) **'नर्सरी न्यूज'** (कैथल), **'पर्यावरण प्रधान'** (कुरुक्षेत्र) प्रकाशित हो रही हैं। सन् 1986 में **'भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका'** कृषि और पशु विज्ञान की राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध मासिक पत्रिका डॉ. बी.एस. मोदी प्रधान वैज्ञानिक (ISSN) भारतीय कृषि अनुसंधान, क्षेत्रीय केन्द्र करनाल के संपादन में प्रारंभ हुई और लगातार प्रकाशित हो रही है। इसमें देश-विदेश के वैज्ञानिकों के शोधपत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित होते हैं। इस पत्रिका के संस्थापक हिन्दी सेवी और हिन्दी प्रेमी राष्ट्रभाषा के गौरव श्री रामेश्वरदयाल गोयल हैं। इस पत्रिका की प्रमुख विशेषता यह है कि वैज्ञानिकों के लेख हिन्दी में छपते हैं, जिसका श्रेय श्री गोयल जी को जाता है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह एक महत्त्वपूर्ण शोध पत्रिका है। रोहतक से **'पीग'** साप्ताहिक और फरीदाबाद से 1996 में **'राष्ट्रीय जनादेश ब्यूरो'** का प्रकाशन हुआ। रोहतक से प्रकाशित **'संघमार्ग'** पत्रिका राष्ट्रीय विचारों की पत्रिका है। इसमें महापुरुषों, भारतीय सांस्कृति और राष्ट्रीय सेवा संघ से संबंधित प्रमुख जानकारियां रहती हैं। **'वसुन्धरापूनम'** त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका साहित्य के प्रति समर्पित साहित्यकार डॉ. लक्ष्मण सिंह एवं हरियाणा लोकसाहित्य को समर्पित रचनाकार रघुवीर सिंह 'मथाना' के सुप्रयासों से रोहतक से प्रकाशित हुई थी। हरियाणा, विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी से प्रकाशित **'शिक्षालोक'**, शिक्षित जगत में लोकप्रिय हुआ। पर्यावरण संबंधी पत्रिका **'पर्यावरण संजीवनी'** अत्यन्त लोकप्रिय हुई।

हरियाणा में **'जतन'** का प्रकाशन भी महत्त्वपूर्ण रहा है। सुरेश जांगिड़ के संपादकत्व में **'अखर-खबर'** (कैथल) ने साहित्य की विविध विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित करके ख्याति प्राप्त की। वे सन् 2011 से **'सांझी एक्सप्रैस'** साहित्य एवं शोध की मासिकी पत्रिका का प्रकाशन भी सफलतापूर्ण कर रहे हैं। भाषा विभाग से बदलकर सन् 1979 में हिन्दी साहित्यकारों के प्रत्यनों के फलस्वरूप हरियाणा साहित्य अकादमी की स्थापना हुई। इसकी प्रमुख साहित्यिक पत्रिका **'हरिगंधा'** के नाम से सुविख्यात है। यह एक उच्च स्तर की पत्रिका है। इसके अनेक विशेषांक भी प्रकाशित हो चुके हैं। आजकल इसके सम्पादक हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक और राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध साहित्यकार डॉ. श्याम सखा 'श्याम' हैं। हरियाणा सरकार द्वारा **'हरियाणा संवाद'** भी हिन्दी की पत्रकारिता में महत्त्वपूर्ण पत्र है।

जीन्द से **'जगतक्रान्ति'** साप्ताहिक प्रकाशित होता था, जो बाद में दैनिक हो गया। जीन्द से ही श्रीरामशरण युयुत्सु जी के संपादन में **'अंगिरापुत्र'** का सफलतापूर्वक प्रकाशन हो रहा है। जीन्द से त्रिलोक चपल के सम्पादकत्व में साहित्य, संस्कृति और संस्कारों की त्रैमासिक पत्रिका **'त्रिवाहिनी'** भी प्रकाशित हो रही है। डॉ. रामआहूजा द्वारा **'पंजाबी सांस्कृति'** राज्यकवि डॉ. उदयभानु हंस की प्रेरणा से प्रकाशित हो रही है। हिसार से प्रकाशित **'चौपाल'** सन् 1994 से प्रकाशित हो रहा है, जिसकी संपादक डॉ. शमीम शर्मा रही हैं। **'रविन्द्र ज्योति'** का हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह पत्रिका विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर आधुनिक भारत के बहुत बड़े साहित्यकार और एशिया के 'गीतांजलि' पर सन् 1913 में प्रथम नोबल पुरस्कार विजेता की स्मृति में केवल कृष्ण पाठक के संपादन में

जीन्द से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका है। नरवाना से ही **'शिक्षा एवं धर्म संस्कृति'** मासिक पत्रिका श्री राजेश कौशिक के मुख्य संपादन में प्रकाशित है। यह पत्रिका धर्म और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में बड़ी महत्त्वपूर्ण है। सिरसा से **'दैनिक सच कहूँ'** का प्रकाशन भी उल्लेखनीय है। **'राष्ट्रीय राजधानी आँचल'** सोनीपत से प्रकाशित है, **'शांतिधर्मा'** मासिक पत्रिका श्री चन्द्रभानु आर्य के संपादन में जींद से प्रकाशित धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रिका है।

**'अमर ज्योति' एक सामाजिक, साहित्यिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक महत्त्वपूर्ण मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन सन् 1950 से निरंतर सफलतापूर्वक हो रहा है। यह हिन्दी की उन दुर्लभ पत्रिकाओं में से है जो लगातार 63 वर्षो से प्रकाशित हो रही है। इसका जन्माष्टमी पर विशेषांक प्रकाशित होता है। यह पत्रिका गुरु जांभोजी जी के दार्शनिक सिद्धान्तों के विवेचन पर आधारित है, जो पर्यावरण सम्बन्धी एक राष्ट्रीय पत्रिका है। यह बिश्नोई सभा हिसार का प्रकाशन है जो बिश्नोई मंदिर हिसार से प्रकाशित होती है। इसका प्रचार-प्रसार भारत के अनेक प्रदेशों और विदेशों में भी है। आजकल यह ISSN का रेफर्ड जर्नल भी है। इसमें वैदिक सिद्धांतों का प्रतिपादन होता है तथा भारतीय दर्शन और संस्कृति की झलक भी मिलती है। इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क मात्र 70 रूपए और आजीवन शुल्क मात्र 700 रूपए है। वास्तव में इस पत्रिका ने हिन्दी भाषा और साहित्य की महान सेवा की है।**

**'मसि कागद'** भारतीय साहित्य की सर्जनात्मक, शोध और कलापरक त्रैमासिक राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका रोहतक से प्रकाशित हुई है। इसके संपादक हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला के वर्तमान निदेशक और भारत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. श्याम सखा 'श्याम' हैं। इस पत्रिका के कई विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं।

**'रोड़ द्रष्टा'** रोड़ बिरादरी का मुख्य पत्र है। इसके संपादक डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादयान हैं। यह पत्रिका सामाजिक समस्याओं को उजागर करती है और उनके समाधान के मार्ग भी प्रशस्त करती है। **'रोड़ जागृति'** करनाल से प्रकाशित मासिक पत्रिका है। यह पत्रिका विविध विषयों से संबंधित है। इसमें समाज सुधार, स्वास्थ्य, व्यवसाय, रोड़ इतिहास, शिक्षा, खेल, राजनीति, प्रशासन, सेना में विशिष्ट योगदान से संबंधित है। इस पत्रिका का गुरु ब्रह्मानन्द विशेषांक भी प्रकाशित हो चुका है। हरियाणवी की रचनाएँ जन साहित्य और सप्तसिन्धु आदि सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। दैनिक समाचार पत्रों में हरियाणवी स्तम्भ शीर्षक के अन्तर्गत रचनाएँ लगातार छपती जा रही हैं। हरियाणवी लोकभाषा में सर्वप्रथम **'लणिहार'** का प्रकाशन हुआ। **'म्हारा हरियाणा'** हरियाणवी भाषा, संस्कृति और साहित्य की मासिक पत्रिका प्रवेशांक नवम्बर सन् 2007 में हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला से प्रकाशित हुआ। यह हरियाणवी लोकभाषा की महत्त्वपूर्ण पत्रिका रही है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के हिन्दी-विभाग की अंतर्राष्ट्रीय दृष्टियुक्त शोध पत्रिका **'संभावना'** एक महत्त्वपूर्ण पत्रिका है। **'जर्नल ऑफ हरियाणा स्टडीज'** का कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र से अनेक वर्षों से प्रकाशन हो रहा है। इस शोध पत्रिका में विशेषकर हरियाणा के साहित्य, इतिहास, जनजीवन आदि से संबंधित आलेख प्रकाशित होते हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय जूलोजी विभाग से हिन्दी **'जीवन्ती'** विज्ञान विषय की महत्त्वपूर्ण पत्रिका प्रकाशित होती रही है, जिसके डॉ. जे.एस. यादव अनेक वर्षों तक संपादक रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों और शोधार्थियों को वैज्ञानिक विषयों में हिन्दी के विकास के लिए प्रेरित किया। यह उनके राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम का परिचायक है।

**'ब्रह्मानन्द सुधा'** एक धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक सिद्धान्तों पर आधारित सुप्रतिष्ठित त्रैमासिक पत्रिका है, जो स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती भूमा आदि कुरुक्षेत्री अवधूत के सिद्धान्तों और पावन जीवन से प्रेरणा प्राप्त करती है। इसका प्रकाशन सन् 2004 से ब्रह्मानन्द आश्रम कुरुक्षेत्र द्वारा हो रहा है। इसकी संपादक साध्वी डॉ. सुशील कुमारी देवी मैत्रेयी आनन्द हैं। कुरुक्षेत्र से ही **'मानस मयंक'** का प्रकाशन महन्त प्रभातपुरी के संरक्षण तथा डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष, दर्शन-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सम्पादकत्व में हुआ। **'आयकर ज्योति'** आयकर विभाग की वार्षिक पत्रिका है। 'वेदपथ' पत्रिका का प्रकाशन फरीदाबाद से है।

बाबू बालमुकुन्द गुप्त द्विवेदी युग के प्रमुख साहित्यकार और पत्रकार थे। वे उस समय **'भारत मित्र'** के सम्पादक थे। उसी परम्परा को पुन:जीवित करने के लिए श्री रघुविन्द्र यादव के सम्पादकत्व में सन् 2009 से **'बाबू जी का भारत मित्र'** अर्धवार्षिक

(ISSN) हरियाणा की प्रमुख साहित्यिक एवं शोध पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने लगा है।

**'युवा संग्राम ज्योति'** मासिक पत्रिका का शुभारंभ 30 अगस्त, 2010 को भारत के स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों को समर्पित पानीपत से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक डॉ. नरेन्द्र कुमार 'उपमन्यु' हरियाणा के प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार और समाजसेवी हैं। यह निभक, नीडर, निष्पक्ष और सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करती राष्ट्रीय मिशनरी साहित्यिक पत्रिका है। इसमें हरियाणा के साहित्य, राजनीति और सरकारी नीतियों का प्रकाशन रहता है। उदीयमान रचनाकारों और युवाओं के लिए यह पत्रिका प्रेरणा का स्रोत है। सम्पादन में 30 सितम्बर, सन् 2011 से प्रकाशित हो रहा है। **'आपके नाम'** पत्रिका रेवाड़ी से प्रकाशित है। इसके सम्पादक श्री रघु यादव रहे हैं। यह पत्रिका हरियाणा की राजनीति से संबंधित है। सोनीपत से सन् 2010 में श्री एस.पी. सिंह के सम्पादन में प्रकाशित मासिक पत्रिका **'रतन जोत न्यूज इण्डिया'** भी महत्त्वपूर्ण है। यह राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विचारों की पत्रिका है।

**'संस्कार चेतना'** मासिक पत्रिका का प्रारंभ कुरुक्षेत्र से जुलाई 2011 में हुआ। इस पत्रिका के प्रयोजनों में मानवीय एवं राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण प्रचार-प्रसार और जागरण है।

**'सप्तसिन्धु'** बहुत पुरानी पत्रिका है, जो संयुक्त पंजाब-हरियाणा में साहित्य की एक प्रमुख प्रतिष्ठित पत्रिका थी। भाषा-विभाग हरियाणा से प्रकाशित सन् 2012 में हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला ने पुन: इस पत्रिका का त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशन आरंभ किया है। इसमें प्रधान संपादक कृष्णकुमार खंडेलवाल, उपाध्यक्ष श्री कमलेश भारतीय और सम्पादक डॉ. मुक्ता हैं। यह एक शोधपरक पत्रिका है। साहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी **'पुष्पगंधा'** श्री विकेश निझावन के संपादन में अम्बाला शहर से प्रकाशित है।

वस्तुत: कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के युग में हिन्दी पत्रकारिता का गौरव विश्वव्यापी है। प्रिंट मीडिया का यह महत्त्वपूर्ण अंग है। इसे लोकतंत्र का चतुर्थ स्तम्भ कहा जाता है। वर्तमान में राजनीतिक जागरण, समाज सुधार, शिक्षा, संस्कृति, साक्षरता, पर्यावरण, राष्ट्रीय विकास में पत्रकारिता का योगदान महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्रीय एकता, अखंडता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है हरियाणा में हिन्दी पत्रकारिता का विकास दिन दुगना और रात चौगुना हो रहा है, जो इसकी दशा और दिशा का परिचायक है। हरियाणा में पत्रकारिता को अधिक विकसित करने के लिए बालसाहित्य और हिन्दी को विज्ञान तथा तकनीकी विषयों से जोड़ने के लिए पत्रिकाओं की महती आवश्यकता है। हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता व अमर-ज्योति का भविष्य उज्ज्वल है।

## संदर्भ


1. एस.वाई. कुरैशी, हरियाणा सांस्कृतिक दिग्दर्शन, लोकसम्पर्क एवं सांस्कृतिक विभाग, हरियाणा, सन् 1978.
2. डॉ. साधुराम शारदा, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, भाषा विभाग, हरियाणा, चण्डीगढ़, सन् 1978.
3. डॉ. केशवानन्द ममगाईं, हिन्दी पत्रकारिता के विकास में हरियाणा की देन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ।
4. सम्पा., डॉ. के.सी. यादव, जर्नल ऑफ हरियाणा स्टडीज, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।
5. डॉ. शशिभूषण सिंहल एवं सत्यपाल गुप्त, हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान, हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़, 1991.
6. डॉ. जयभगवान गोयल, हरियाणा पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति एवं लोक साहित्य, आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली, 1996.
7. संभावना, हरियाणा का हिन्दी साहित्य विशेषांक, हिन्दी-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, सन् 2001.
8. रघुवीर मथाना एवं डॉ. बाबूराम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन, रोहतक, सन् 2004.
9. डॉ. लालचन्द गुप्त 'मंगल', हरियाणा का हिन्दी साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, सन् 2006.
10. डॉ. लालचन्द गुप्त 'मंगल', हरियाणा के प्रमुख हिन्दी साहित्यकार, आई.बी.ए. पब्लिकेशन्स, सन् 2009.
11. डॉ. कृष्ण कुमार खण्डेलवाल आई.ए.एस., हरियाणा एन्साइक्लोपीडिया, साहित्य खण्ड भाग-दो, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सन् 2010.
12. डॉ. बाबूराम, हरियाणवी भाषा और साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, सन् 2011.
13. सम्पा., श्रीमती उर्मि कृष्ण, 'शुभतारिका', हरियाणा अंक, अक्तूबर-2012



❑ **डॉ बाबूराम** डी.लिट्.
प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा
मो. 93158-44906

# जाम्भाणी साहित्य में श्री हनुमत् चरित्र

धर्म संस्थापना के लिए भगवान सगुण रूप में इस धरा पर अवतार ग्रहण करते हैं : (यदा यदा हि धर्मस्य .... गीता,4/7, जब-जब होय धर्म कै हानि : रामचरितमानस 1/2)। उनके इस लीला कार्य को सम्पन्न करवाने हेतु विभिन्न देवता भी उनके साथ इस पृथ्वी लोक में आते हैं। श्री हरि के रामावतार के समय रूद्रावतार श्री हनुमान जी की इस रूप में बहुत प्रसिद्धि है। इतिहास ग्रन्थ रामायण, महाभारत के अतिरिक्त विभिन्न पुराणों में श्री हनुमान से सम्बन्धित कथाएं अनेक स्थानों पर मिलती है। इस पृथ्वी पर इष्ट आराध्य और पूज्य देवता के रूप में श्री हनुमान की मान्यता युगों से चली आ रही है। भारतवर्ष के गांव और शहरों में यहां तक कि गली चौराहों में श्री हनुमान के मन्दिर बहुतायत में मिलते हैं। भारतीय जनमानस में इस देवता के प्रति श्रद्धाभाव की कितनी गहरी पैठ है, इसका यह अनुपम उदाहरण है। ऋषि-मुनि संत महापुरूषों की हनुमत् भक्ति की बात हो या भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में वीर शहीदों द्वारा इस देवता से प्रेरणा लेकर अपने चरित्र को गढ़ने की बात हो, यहां तक कि भारतीय सेना भी बजंरग बली के जयघोष के साथ अपने अभियान का शुभारम्भ करती है।

इस धीर-वीर, बलवान, विद्वानों में अग्रगण्य, नैतिक ब्रह्मचारी, सेवा की मूर्ति, भक्त-वत्सल हृदय के धनी हनुमत् चरित्र से जाम्भाणी साहित्य भी अछूता नहीं रह सका। भगवान श्री जाम्भोजी की सबदवाणी के अतिरिक्त, जाम्भाणी सन्त कवियों की रचनाओं में अनेक स्थानों पर हनुमत् चरित्र का चित्रण हुआ है। सर्वप्रथम हम 'सबदवाणी' में इस चरित्र की खोज करते हैं तो सबद संख्या 63,65,85 में इसका वर्णन मिलता है।

**राघो सीता हनवंत पाखों। कौन बंधावत धीरू। (सबद-63)**

राम और सीता को (उनके सच्चे सेवक) हनुमान जी के बिना कौन धैर्य बंधाऐ? लक्ष्मण के युद्ध स्थल में मूर्छित होने पर संजीवनी बूटी लाकर श्रीराम को धैर्य बंधाया था और रावण द्वारा कैद करने पर व्याकुल हुई सीता को मुद्रिका देकर धैर्य बंधाया था। आपत्ति काल में धैर्य बंधाने वाला ही सच्चा सेवक है। वैसे सच्चे सेवक मुझे मिल जाऐ तो मुझे धैर्य हो। इस सबद की अन्तिम पंक्ति में श्री गुरु जाम्भोजी पुन: हनुमान जी स्मरण करते हैं -

**राघो सीता हनवंत पाखो, दुख-सुख कासूं कहियों।**

राम और सीता के सच्चे सेवक हनुमान जी जैसे सेवक के बिना (मैं) अपनी सुख-दु:ख की बात किससे कहूं ?

**तउवा काज जो हनुमत सारा, अवर भी सारत काजूं। (सबद-65)**

-''कार्य-सिद्धि और सेवा तो अनेक लोग करते हैं किन्तु जैसी अद्भुत सेवा हनुमान जी ने की, वैसी और किसी ने नहीं की।''

**हनुमत सो कोई पायक न देख्यों (सबद-85)**

हनुमान जी के समान कोई गुणी सेवक नहीं देखा जिन्होंने नि:स्वार्थ भाव से अथक रूप से राम के मनोभाव समझकर, उनकी सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस सबदों में हनुमान चरित्र के वर्णन में यह विशेष बात रही है कि श्री गुरु जाम्भोजी यहां हनुमान जी के प्रति अपार आभार और स्नेह प्रकट करते हुए से प्रतीत हो रहे हैं। यहां श्री गुरु जाम्भोजी का त्रैतायुग में राम रूप में स्वयं के होने का संकेत भी है और वे तीसरे युग में भी नि:स्वार्थ भाव से की हुई सेवा को विस्मरण नहीं कर पा रहे हैं तथा यह अभिलाषा भी रखते हैं कि इस कलयुग में मुझे हनुमान जी जैसे सेवक मिले। हनुमान जी के चरित्र का वर्णन करके श्री गुरू जाम्भोजी पंथ में दीक्षित होने वाले लोगों से अपेक्षा रखते हैं कि वे भी परम नैतिक और चरित्रवान बने। सेव्य और सेवक का सम्बन्ध बहुत विचित्र होता है। सेव्य अनन्यता के साथ सेव्य के प्रति पूर्ण समर्पित होकर सेवा करता है, वह सेव्य के गुणों और प्रभुता से प्रभावित होकर उसे सर्वश्रेष्ठ मानता है और उसके एक संकेत मात्र से अपने जीवन का सर्वोस्व समर्पित करना अपना सौभाग्य मानता है, वहां किसी तरह का नाप-तौल और लालसा तथा प्रति उपकार की अपेक्षा का भाव नहीं रहता, ऐसे सेवक को पाकर सेव्य भी भगवत् हो जाता है और वह सेव्य की ऐसी संभाल करता है जैसे पलकें आंखों की और मां बच्चे की रक्षा करती है। श्री

गुरु जाम्भो जी के हुनमान जैसे सेवक बनने के आदेश को पंथ में चरितार्थ करके दिखाया भी गया। अपने इष्टगुरु के आदेश का पालन करते हुए सत्य, अहिंसा, जीवरक्षा आदि के लिए इस पंथ के पथिकों ने अपना सब कुछ अर्पण किया है।

जाम्भाणी साहित्य के अन्य संत कवियों ने भी गुरु महाराज की तरह श्री हनुमान का सादर स्मरण किया है। सन्त कवियों की साखी आदि रचनाओं के अलावा मेहोजी थापन की रामायण और सुरजनदास जी पूनियां के रामरासौ में हनुमान चरित्र का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

भारत और विश्वभर में फैले करोड़ों हिन्दुओं के घरों में दो मुख्य ग्रन्थ लगभग मिलते हैं, जिनका वहां नित्य स्वाध्याय होता है-वे हैं श्री कृष्ण की गीता और गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस। विक्रमी सत्रहवी शताब्दी में तुलसीदास ने एक ऐसे महान काव्य का सृजन किया जिसने भक्ति आन्दोलन और वृहत् हिन्दू समुदाय को आन्दोलित किया। पर भारतीय साहित्य जगत और हिन्दु समाज यह नहीं जानते कि तुलसीदास के रामचरितमानस से 58 वर्ष पूर्व एक उत्कृष्ट रामचरित्र काव्य का निर्माण हो चुका था। इस काव्य के सृजक थे, 'बिश्नोई ऋषि' जांगलू के मेहोजी थापन। अनुभवी विश्लेषकों और जिज्ञासु पाठकों ने इस काव्य भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसी काव्य में वर्णित हनुमत चरित्र बहुत ही विलक्षण बन पड़ा है जिसके कुछ छन्द इस प्रकार है-

**हंम हंम हंणवंत हरषियों, कहि सूं कियौ किलाव।**
**हणंवंत सायर कूदियो, जांणौ आभौ बीज सळाह।।**

-हर्षित होकर हनुमान जी किलकारी भरकर सागर के उपर से कूद गये, ऐसा लगा मानो बादलों में बिजली कौंध गई हो। यहां अन्य रामायणों से अलग मेहोजी वर्णन करते हैं कि हनुमान जी इतने उत्साह से कूदे कि वे सागर और लंका को बहुत पीछे छोड़कर आगे चले गये जहां एक वृद्धा स्त्री ने कहा- हे अंजनी पुत्र ! तुम वापस कूदो क्योंकि लंका तो बहुत पीछे रह गई है :-

**जल निध्य सायर लोपियों, लंक पाछै जुवं लाह।**
**दाव वतावै डोकरी, अंज सुत कूदि अंवळाह ।।**

लंका में पहुंचने पर सीता को अपना परिचय देने के बाद जब हनुमान से सीता ने पूछा कि तुमने इतनी विघ्न बाधाओं से भरे अथाह समुद्र को कैसे पार कर लिया तो यहां हनुमान ने अपने पराक्रम को छिपाते हुए इसका श्रेय सीता के सत, लक्ष्मण की शक्ति और श्री राम की मुद्रिका को दिया -

**सत सिंवरयो सीता तणौ, लखमण तणौ ज बाण।**
**श्री राम रो मूंदड़ौ, कयौ र भुजा रो पांण।।**

ऐसे विनीत वचन सुनकर सीता बहुत प्रसन्न हुई । जब हनुमान ने अशोक वाटिका के फल-खाने की सीता से अनुमति मांगी तो सीता ने रावण के बल-पराक्रम को बताते हुए सावधान रहने को कहा तो हनुमान ने सीता को ढांढस बाधते हुए वचन बोला हे माता! मैं लंका को जड़ से उखाड़ फैकूंगा, रावण को मार डालूंगा और आपको श्री राम के पास ले जाउंगा -

**लंक उपाडूं सूं जड़ां, सायर अंबा तांह।**
**मारूं रावण राजियों, ले जूं देखतांह।।**

हनुमान जी फल खाने के साथ-साथ रावण को चुनौती देने के लिए अशोक वाटिका को तहस-नहस कर डालते हैं। राक्षस लोग पकड़कर हनुमान जी को रावण के दरबार में पेश करते हैं, जहां उनकी पूंछ में आग लगाई जाती है उस आग से हनुमान लंका जला डालते हैं और सीता का संदेश लेकर श्रीराम के समक्ष उपस्थित होते हैं। इस प्रसंग में मेघनाथ की जगह कुम्भकरण हनुमान जी को पकड़ने को आता है और उसकी तलवार टूटने से राक्षस भयभीत हो जाते हैं। हनुमान अपनी मृत्यु का भेद स्वयं बताते हैं कि मेरी पूंछ में आग लगा दो। सीता से हनुमान की बिदाई का छंद तो उद्वेलित करने वाला है, सीता का विलाप विचलित करता है। मेहोजी ने यहां करूणा, वीर रस के अलावा हनुमान की शक्ति, बुद्धि और सीता राम के प्रति भक्ति का बड़ा रोचक वर्णन किया है। निम्न दृष्टव्य है -

**बाग विधुंस्यौ रावळौ, वन रो कियौ विणास।**
**मारूंलो रे बंदरा, संगळ काढूं सास ।।143।।**
**कुंभै खांडो भांनियो, असरां उरि अंणराव।**
**मोत बतावै बांदरो, सांभल्य रांणा राव।।146।।**
**पूंछड़ सूत पळेटि कै, दियौ बंसदर लाय।**
**हंणवंत कूद्यो छोह करि, झाळाता गैंणि लगाय।।147।।**
**संमंद गड़ो ज्यौं ऊकल्यौं, गणूं उडाई झाल।**

**कहि मेहा इणि बंदरै, लंक कीवी परजाळ।।48।।**
**काळा हुबा कांगरा, लंका पड़ियौ सोर।**
**पवण चलावै चोह दिसा, जांळधर को जोर।।**
**हंणवंत आयौ सांभल्यौ, परगट किवी पिछांण।**
**अै परवाड़ा तूं करैं, श्रीराम के तांण।।55।।**
**सीत संदेसो मोकले, हंणवंत मांडयौ हाथि।**
**चेरी चौकस राम री, जगजीवंण रै साथि।। 57।।**
**लोयंण वरसै लाछि का, ओळू करै अपार।**
**औगंण ऊपरि गुणं करौ (थारी) मूरत ने धनकार।। 158।।**
**हंणवंत आयौ सांभल्यौ, ल्यायौ सीते री सार।**
**माथै मांण्यक किळकिळ्यौ, रहस्यौं लखंण कंवार।।160।।**
**हंणवंत ऊभौ बोहबळी, लछमंण पूछै बात।**
**कुंण नर सीता ले गयौ, किण नर घाती घात।।161।।**

हनुमान जी द्वारा सीता का संदेश सुनकर और लंका का समाचार जानकर श्रीराम लंका प्रस्थान की तैयारी करते हैं। यहां लक्ष्मण हनुमान जी से ही कहते हैं कि तुम शीघ्र आओ रावण को मारकर लंका लेने और सीता को छुड़ाने चलें –

**लछमण तैड़े बंदरा, हणांवत वहलौ आव।**
**रावण मारि लंका लिवा, सती छुडावंण जांह।।**

जब सेना प्रस्थान करती है तो हनुमान जी सबसे आगे चल रहे है– **संदक रीछ रल्या रिण वंदर, हंणांत आगू चालै।** रणभूमि में जब लक्ष्मण शक्ति बाण लगने से मूर्छित हो जाते हैं तो राम विलाप करते हैं। हनुमान संजीवनी बूटी लाने जाते है। देरी लगते देखकर अधीर पुरूष की तरह व्याकुल श्री राम का कथन तथा तभी हनुमान का पहुंचना श्रीराम के हर्ष का कारण बनता है–

**हणांवंत अजूं न आवियौ, गयौ ज मूळी लीण।**
**काज पराया सींवळा, जां दुखै ज पीड़।।211।।**
**जड़ो उपाड़ि र कांधै लीयौ, ले हुंणवंत धरि आयो।**
**घसि करि मूळी उपर लाई, सूतौं कंवर जगायौ।।213।।**

महिरावण जब राम लक्ष्मण का हरण करके पातालपुरी ले जाता है तो हनुमानजी उन्हें छुडकार लाते है। उस समय लक्ष्मण तो राम का स्मरण करते हैं और राम हनुमान का स्मरण करते हैं। रोचक छंद इस प्रकार है–

**लछमंण तो रामचंद जी सिंवरयौ, राम सिंवरयौ हंणवंतो।**
**अंजणी जायौ गंणौ भणीजूं, सारूं असरया काम।**

मेहोजी रामायण को सम्पूर्ण करते हुए कहते हैं कि अगर सीता का हरण न होता तो सीता का 'सत', लक्ष्मण का 'जत' और हनुमान का बल–पराक्रम ये प्रकट नहीं होते –

**सत सीत जत लखमंणा, सबळाई हणांवत।**
**जे आ सीता न जावही, अै गुंण मांहि गळंल।।25।।**

महात्मा सुरजन दास जी पूनियां ने अपने काव्य ग्रन्थ रामरासौ में हनुमत चरित्र का सुदंर वर्णन किया है संक्षेप में एक उदाहरण इस प्रकार है–

**राघव वैद हकारि, तांम सुर कांनि सुणांवे।**
**अमर जड़ी कंवळासि, सूर वीणि उगै आवै।**
**कवि हंणौ तसळीम करि, सिरि कंध नुवायौ।**
**जांणि पंद्यी अधराति, डडि उदियागर आयो।**

हनुमान जी द्वारा लंका– दहन का सजीव चित्रण सुरजन जी ने किया है–

**भल भल रूप अरूप भकभकियो, खालिक जोति हुई खंडि–खंडि।**
**हालिया उठि दरियाव दिस हंणवंत, महलि दीपका मंडि।।50।।**

सबदवाणी तथा इन दोनों कवियों के अतिरिक्त भी जाम्भाणी साहित्य में हनुमत् चरित्र का उल्लेख मिलता है। उदोजी की साखी की एक पंक्ति तथा परमानंद जी वणियाल के एक दोहे के साथ इस लेख को विराम मिलता है'

**सच्चा पायक रामचन्द्र का हनुमान बलकारी हौवै।।**– उदोजी साखी।

**साहिब ते सेवग बडो, जो निज धर्म सुजांग।**
**राम पाज बांध उतरियौ, कूद गयौ हनुमान।। परमाणंद**

**संदर्भ ग्रंथ**–1. सबदवाणी, (संपा) स्वामी कृष्णानंद आचार्य
2. मेहो जी कृत रामायण, (संपा) डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
3. जाम्भो जी, बिष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, डा. हीरालाल माहेश्वरी
4. सुरजन जी कृत रामायण, (संपा.) डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई
5. जांभाणी साखी संग्रह, (संपा.) विवेकानंद

❑ **विनोद जम्भदास कड़वासरा**
गांव हिम्मतपुरा, अबोहर, फाजिल्का (पंजाब)
मो– 09417681063

# कल्पतरु कंकेड़ी

हरि कंकेड़ी हवा महल है , करते जिसमें हरि निवास।
शीतल छाया में बैठने से, जागृत होता विवेक प्रकाश।

सुन्दर-सुन्दर पतियां जिसकी, तिखी होती है।
प्यारे प्यारे पुष्प लगते, जैसे माणिक व मोती है।

फूलों की खुशबू मन भावन, मदमस्त हमें कर देती है।
मुफ्त में करती मनोरंजन, आनंद सबको ही देती है।

मधुमक्खी व भंवरे तितली, जिस पर सदा मंडराते हैं।
पक्षी प्रेम से परिवार बसा, गगन में गाना गाते हैं।

कंकेड़ी का वृक्ष कभी भी, अकाल में भी सूखता नहीं।
पवन से पानी लेकर पीता, परमार्थ करने में चूकता नहीं।

कंकेड़ी की कोमल टहनी, लता की तरह लटकती है।
कुंज बनता कलाकृति से, नजर वहीं अटकती है।

बार-बार दर्शन करने से, हृदय प्रसन्न हो जाता है।
कृष्ण जैसा आकर्षण जिसमें, दर्शक शांति ही पाता है।

अनंत गुणों की खान होकर, बेहद सादी व सुन्दर है।
जांभोजी की सबदवाणी में, कंकेड़ी सुखों का समुन्दर है।

कवि कोविद कृष्ण कृपालु, कंकेड़ी का वंदन करते है।
नारायण का निकेतन इसी में, कवि तेज यह कृंदन करते है।

स्वर्ग से सुन्दर आस पास को, हम सब लोग बना सकते।
एक-एक घर में एक कंकेड़ी, लगाकर अगर हम सिर ढकते।

हरियाली हर हाल में हमको, देती रहती कंकेड़ी सदा।
हरे भरे पतों का झुरमुट, रहता सदा लदा ही लदा।

कौन जाने कभी भी हमको, यमदूत लेने आ सकते हैं।
जम्मे हुए की मृत्यु ही होगी, वृक्ष हमें अमर रखते हैं।

कंकेड़ी का वृक्ष हमारी, गौरव गाथा में आता है।
प्रात:पूजनीय पावन कंकेड़ी, जिसका जांभोजी से नाता है।

कंकेड़ी की शीतल छाया में, सहर्ष बिश्नोई बने थे जाट।
जाटों ने अपनी आंखों देखा, विष्णु का रूप विराट।

जगद् गुरु जांभोजी ने ही, महलों भवनो से बढ़कर।
कंकेड़ी को मंडप मेड़ी कहा, मानलो सबदवाणी पढ़कर।

क्षण भंगुर इस संसार में, विष्णु की कृपा बनी रहे ।
घर-घर में हो वृक्ष कंकेड़ी, छाया जिसकी घनी रहे।

जीवजंतु आबाद रहे सब, सुंदर समाज का सृजन हो।
मुसलाधार मेघ बरसे, सुहानी बिजली की गर्जन हो।

मौज महलो में है नहीं, जंगल में तो मंगल है।
कोठियों में कलह कृंदन है, संगमरमर के ही दंगल है।

अमीर उन्हीं को माना जाये, जिनके खेतों में वृक्ष है।
शुद्ध शाकाहारी रहकर जो भी, विष्णु भजन में दक्ष है।

वृक्षों के पालन पोषण से, गगन में भी फसल होती है।
वन केंद्रित जीवन यापन से, पूंजी भी असल होती है।

कौन कहता कि कंकेड़ी तो, कल्पतरु ही नहीं है।
स्वर्ग अगर है कहीं तो, यहीं है, यहीं है, यहीं है, यहीं है।

कंकेड़ी में कुल मिलाकर, अनंत असीम विभूति है।
पलते जिसमें पक्षी पतंगे, संतों की यह अनुभूति है।

कंकेड़ी के केवल कुछ पते, चबाता नित्य कोई चाव से।
मधुमेह मिटकर ही रहता, खतरा नहीं किसी छाव से।

कंकेड़ी की कोमल पतियां, चुनकर चंटनी बनाई जाये।
लेकर लाभ लौकिक जगत में, सदैव खुशियां मनाई जाये।

कंकेड़ी का काढ़ा बनाकर, जो कोई प्रेम से पीता है।
आरोग्य लाभ अवश्य ही होता, दीर्घ जीवन वह जीता है।

कंकेड़ी किसी भी रोग में , इतनी क्यों उपयोगी है।
इसकी महिमा कहने वाले, युगदृष्टा सुजान योगी है।

कंकेड़ी है कष्ट निवारक, जिस घर में जहां खड़ी है।
महक मधु प्रदायक पेड़ है, कंकेड़ी बिना गड़बड़ी है।

अपनी सादर आदरणीय उपस्थिति से, कंकेड़ी कमाल कर देती है।
पुण्य के प्रबल प्रताप से, रिक्त कोषों को भर देती है।

विष्णु स्वयं विराजते इसमें, दिव्य दृष्टि से देखा जाता है।
धर्मराज के बहीखाते में पलपल, परमार्थिक लिखा जाता है।

❑ **डॉ. तेजाराम बिश्नोई**
अध्यक्ष( अर्थशास्त्र विभाग) , द्रोणाचार्य राजकीय महाविद्यालय, गुड़गावां ( हरियाणा)-122001

# दिव्यताओं का विस्तार है प्रौढ़ावस्था

यह मनुष्य जीवन हमारे लिए बेशकीमती है। इस संसार में मनुष्य के आने का उद्देश्य केवल जीवन यापन नहीं है। इस चंदन रूपी जीवन को मात्र काठ समझ कर तापने या सर्दी मिटाने का साधन न समझे बल्कि इसको संसार की शिला पर घिसकर सुगन्धित कर इसकी उपयोगिता सिद्ध करें। यह जीवन विराट है इसमें ब्रह्म सा तेज, वायु सा वेग, धरती सा धैर्य, अग्नि सी चमक, जल जैसी शीतलता तथा आकाश जैसी विशालता है। मनुष्य उम्र बढ़ने के साथ जीवन की संपूर्णता की ओर जाता है।

दीर्घ जीवन दिव्यताओं का विस्तार है। बाल्यावस्था अबोधावस्था है, युवावस्था बोधावस्था है किन्तु वृद्धावस्था परिपक्वता युक्त विवेकावस्था है। प्राकृतिक रूप से भी परिपक्वावस्था सबसे अधिक आकर्षक, सुगन्धित एवं माधुर्ययुक्त हुआ करती है। वृद्धावस्था की दिव्यतांए है दिव्य आचार-विचार, दिव्य कर्म, दिव्य-दृष्टि, दिव्य-श्रवण, मनन-भाव आदि।

वृद्धावस्था को हम जीवन की निःकृष्ट, अवांछित और कष्टप्रद अवस्था न माने। बुढ़ापा तो आयेगा आने दीजिए। वृद्धावस्था के सुखदायी बनने के लिए सर्वप्रथम अपने मन से वृद्धावस्था की भावना को निकाल दीजिए। यह तो जीवन का सर्वोच्च और उत्कृष्टतम शिखर है। जिस प्रकार पूर्णिमा का चांद अपनी सम्पूर्ण कलाओं से कलान्वित होता है, उसी प्रकार मानव की वृद्धास्था भी सम्पूर्ण कलाओं से कलान्वित होनी चाहिए यह मृत्यु को परे धकेल कर योगस्थ रहते हुए यज्ञीय जीवन बिताने और परोपकार रत रहने के लिए है। इससे हम समज और अपना दोनों का कल्याण कर सकते हैं। वेद मंत्र का ऋषि पूछता है- 'कस्मै देवाय हविषा विधेम?'' उत्तर है- 'क' अर्थात् उस सुख स्वरूप परमात्मा के लिए उपासना करें लेकिन इससे पहले अपनी स्वयं की अर्थात् आत्मदेव की साधना करनी होगी क्योंकि उसी आत्मा के द्वारा ही वह परमात्मा सिद्ध होगा। अपने आपको चिन्तन, चरित्र और उन्नति की कसौटी पर सिद्ध करना ही वह स्थिति है जो हालमार्क सौ टंच खरा सोना है।

आधुनिक काल में बदलते परिवेश में जैसे जैसे जीवन की आवश्यकताएं बढ रही है वैसे वैसे दिनचर्या में व्यस्तताएं बढ़ रही है। इसका प्रभाव कहीं न कहीं परिवारों पर भी बढ़ रहा है। अपने इस एकाकीपन का भी लाभ उठाइये। इस सकारात्मक ले, आतमचिन्तन के लिए इसका सद् प्रयोग करें। इस एकान्तरूपी नौका पर बैठकर जीवन सागर पर विहार करें। सुकर्मो को पतवार बना कर इस भवसागर को पार करें। किसी शायर ने कहा है-

**ऐश से क्यों खुश हुए क्यों गम से घबराना किये।**
**जिन्दगी क्या जाने क्या थी और क्या समझा किये।।**

सर्वमान्य कर्म सिद्धान्त है कि जब हम न तो कर्म करने से बच सकते है और न इसके फल भोगने से तो बच सकते है, अपने वर्तमान समय को व्यर्थ मत जाने दे, आज के पुरूषार्थ से ही भावी भाग्य का कथानक लिखना शुरू कर दें, यह पूंजी अपने ही भावी पुरूषार्थ से अपनी पास-बुक पर जमा होगी।

कहा जाता है कि वृद्धावस्था में बूढ़े भी बच्चों के समान बन जाते है। बूढ़ा भी धीरे धीरे बच्चों जैसा हो जाता है। उससे भी ज्यादा निरीह हो जाता है। परन्तु इसमें अन्तर ये है कि बच्चों पर तो सभी लाड करते हैं पर बूढ़ो पर कोई बिरले ही दया करते हैं। यह नई पीढ़ी की मनोवैज्ञानिक सोच बच्चों को स्वेट मार्केट भी अपनी पुस्तक में बूढ़ो को उत्साहित करते हुए लिखते है Why Grow Old

कैसे रखे जीवन को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक रूप से उन्नत, आइए कुछ बिन्दुओं पर विचार करते हैं -

**1. शारीरिक दृष्टि से:** प्रौढ़ावस्था आरम्भ होने के साथ ही युक्ति कृत प्रयत्नो द्वारा अपनी प्रकृति के अनुसार त्रिदोषो का शमन करते हुए अपनी अनुकूल संतुलित भोजन और रसायन आदि का प्रयोग करके उत्तम स्वास्थ्य को बनाये रखें। जो आयु को बढ़ाये और शरीर को हानिकारक प्रभावों से रोके, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये

वही रसायन है। जैसे हरड़ चूर्ण, आमलकी रसायन, गिलोय, च्यवनप्राश आदि।

**2. मानसिक आचार-विचार की दृष्टि से:** नियमित दिन चर्या रखें, संतुलित उत्तम चारित्रिक व्यवहार रखें। मानसिक वेग काम-क्रोध, लोभ-मोहादि का त्याग करते हुए अनुशासिक जीवन जिये। दु:ख से बचने का एकमात्र उपाय है हर हाल में राजी रहें। सदा मन में यह भावना रखें कि हे प्रभु मैं किसी बात पर आपत्ति नहीं करूंगा। यदि हम धनवान हैं तो उससे दूसरों का उपकार हो तो सुख मानें। यदि धनवान नहीं है तो इसलिए सुखी रहे कि हम पर अमीरों की तरह हजारों चिन्ताओं का बोझ नहीं है, कोई भय जिम्मेवारी नहीं है। यदि प्रसिद्ध नहीं है तो सोचे कि लोगों की ईर्ष्या-द्वेष से बचे हुए हैं। बच्चों पर भी कभी दोषारोपण न करें, वे संस्कारित है पर उनकी अपनी व्यस्तताएं, कार्यशैली है। अपने कार्यो को जहां तक बन पड़े स्वयं करें पर मातृत्व और पितृत्व की गरिमा निभाते रहें। वेद कहता है

**''विश्वदानी सुमन स: स्याम''**

अर्थात् हमारा व्यक्तित्व फूलों के समान सुमधुर, सुगन्धित और सुमन वाला है।

**3. सामाजिक दृष्टि से:** हमारा समाज के प्रति कुछ कर्तव्य और दायित्व है। हमारे व्यवहार, विचार, कार्य शैली से समाज लाभान्वित हो। अपनी रूचि व गुणों के अनुसार कोई कार्य चुनें - तो नि:शुल्क चिकित्सा व्यवसायी है तो अनुभव, उपदेशक है तो प्रगतिशील चिन्तन, समाज को दे। देशकाल के अनुसार शालीन वेशभूषा रखें हमारे अनेक महापुरूषों ने अपनी पोशाक व चरित्र से संस्कृति को सम्मानित किया है।

**4. सच्चे मित्र बनायें :** प्रसिद्ध पंक्ति है ''राजद्वारे व श्मशाने यो निष्ठति स: बान्धव:'' जो सुख-दुख में साथ खड़ा हो वह सच्चा मित्र है। जिसने विशुद्ध हृदयों की मित्रता प्राप्त कर ली उसका जीवन सरलतम हो गया। एकाकी जीवन में कोई अन्तरंग सखा हो तो बाह्य जीवन भी उसी से प्रेरित होता है। बस एक बात ध्यान रखें जो हमारा मित्र बने वह अपने सौभाग्य की सराहना करें। मित्रता जीवन में प्रगति के लिए एक आवश्यक तत्व है।

**5. अपनी समीक्षा करें**- आत्मनिरीक्षण करते रहे। कहीं कोई चूक हो गई तो सुधारने का प्रयत्न करे। कहीं कथनी और करनी में अन्तर तो नहीं आया है। दूसरों की कमियों को गौण और अपनी को ढूंढे और दृष्टता से दूर करें। कोई बताये तो बुरा भी न मानें। प्रसन्न चित्त रहें बच्चों के साथ समय बितायें महर्षि दयानन्द व्यस्त दिनचर्या में भी अपनी समीक्षा करते थे, उनसे शिक्षा ले। तभी अपने प्रति कठोर और दूसरों के प्रति सहानुभूति से भी अधिक समानुभूति रख पायेंगे।

**6. ध्यान योगाभ्यास :** ईश्वरोपासना, नित्य कर्म ध्यानादि किसी भी परिस्थिति में न छोड़े, इससे मन शान्त और आत्मबल प्राप्त होता है। यही जीवन का चरम और परम लक्ष्य है। नित्य स्वाध्याय, सत्संग करें। 'बिनु सत्संग विवेक न होई'

**7. आर्थिक निर्भरता सुनिश्चित करें :** कहते हैं पराधीन सपनेहुं सुख नांही। अपनी जीविका का प्रबंध अंत तक रखें। आर्थिक संपन्नता से सम्मानित, सुखी और ढंग से जीने का अधिकार भी स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखते हुए अपने सामर्थ्य द्वारा पूरा करना बड़ा-सुखद होता है पर अपव्यय, ऋण और व्यर्थ की तड़क भड़क और व्यय कराने वाली परम्पराओं से बचे रहें।

अन्त में अपने विचारों, योजनाओं को क्रियात्मक रूप दे। दृढ़ प्रयत्न और सतत् कार्य करते रहने वाले पुरूष सिहों ने इस संसार में विलक्षण क्रान्तियां की है। परिस्थितियां उन्हें किसी भी तरह दबा नहीं पाई। दु:ख निराशा अनुत्साह उनकी राह कभी रोक नहीं पाये। एकाकी पुरूषार्थियों ने वह कर दिखाया जो अनुत्साह ग्रस्त कोई बड़ा राष्ट्र भी न कर पाया। महर्षि स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल, सरदार पटेल से लेकर स्वामी रामदेव जी तक अनेकों महापुरूष माहत्मा, धर्मात्मा, विद्वान हमारे प्रेरणा स्त्रोत है। उनकी शिक्षाओं पर चले, दिव्यताओं का विस्तार करें । तभी कह सकेंगे 'यशश्च मे यज्ञेन कल्पताम्'।

❑ **श्रीमती आदर्श बिश्नोई**
एन. 179, सेक्टर-25, नोएडा
उतर प्रदेश

# सामाजिक हलचल

## नीमगांव में मेला सम्पन्न

नीमगांव, जिला हरदा 'मध्यप्रदेश' में दिनांक 13-12-2012 को मेला लगा। मेले से पूर्व 6 दिसम्बर 2012 से 12-12-2012 तक जाम्भाणी हरि कथा का आयोजन हुआ। कथावाचक डॉ. गोवर्धन राम आचार्य ने बडे सुन्दर ढंग से गुरु महाराज की अमृतमयी वाणी का प्रचार किया। दिनांक 12-12-2012 की शाम 6 बजे गुरु जम्भेश्वर भगवान की शोभा यात्रा निकाली गई, जिसमें डॉ. गोवर्धनराम आचार्य, स्वामी गोपाल दास जाम्भा, स्वामी गोपाल दास, रामड़ावास के साथ गांव व बाहर से आए श्रद्धालु शोभा यात्रा में शमिल हुए। शोभा यात्रा मन्दिर से पूरे गांव में निकाली गई। ट्राली में सवार संतगण तथा बीच में गुरु महाराज का छत्र चिन्ह् व ज्योति शोभायमान हो रही थी। पूरे गांव में समाज के लोगों ने घी के दीपक जलाए, पूरे घर को रोशन किया ऐसा लगा मानो आज नीमगांव में दिपावली का त्यौहार आया हो क्योंकि वहां के लोगों का जोश, खुशी, श्रद्धा की कोई कमी नहीं थी। जैसे ही शोभा यात्रा अपने घर के द्वार पर आती तो उस घर की लड़की या बहु गुरु महाराज की आरती उतारती व तिलक लगाती तथा घर का मुखिया संतो का फूल माला पहनाकर उन्हें श्रद्धा अनुसार दक्षिण भी देते थे। इस प्रकार पटाखे फूलझडिया बच्चे बजा रहे थे। यह शोभा यात्रा रात 9बजे वापस मन्दिर में पहुंची। जैसे ही शोभा यात्रा मन्दिर पहुंची तो पण्डाल में उपस्थित लोगों ने बड़े जोर से जयकारा लगाकर स्वागत किया। बाद में जागरण का आयोजन हुआ। जिसमें प्रहलाद से लेकर भगवान गुरु जम्भेश्वर तक की लीलाओं का वर्णन किया गया। यह जम्भ चरित्र नाटक आज के युवओं को अपने धर्म के बारे में प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिला। उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि आज जो बात हमें वैज्ञानिकों से सुनने में मिल रही है वह बात हमारे इष्टदेव श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज ने 500वर्ष पूर्व ही बता दी थी। कलाकारों की हौसला अफजाई के लिए श्रद्धालु ताली बजा बजाकर उनका साथ दे रहे थे। 13-12-2012 को सुबह 8 बजे मन्दिर प्रागंण में डॉ. गोवर्धन राम आचार्य की उपस्थित में विशाल हवन हुआ तथा पाहल का आयोजन किया गया। पाहल लेकर हवन में आहुति देकर सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने अपने को धन्य किया। यह कार्यक्रम दिन भर चलता रहा। दिन के 11 बजे मन्दिर प्रागंण में खुला अधिवेशन हुआ जिसमें समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। वूमन अवार्ड से किरण बेदी द्वारा सम्मानित हो चुकी रेखा बिश्नोई को भी सम्मानित किया।

श्री रामनारायण सारण पूर्व कुलपति ने समाज के बहुत ही गहन विषय पर चर्चा की उन्होंने कहा कि हमारा समाज खेल व पढ़ाई में क्यों गोल्ड मेडल नहीं ले रहे है। वजह साफ है कि आज बच्चों को मोबाईल, मोटरसाईकिल आदि ला कर देते है और उनकी शिक्षा व संस्कार पर अभिभावाक ध्यान नहीं देते है इसी कारण आज का युवा शिक्षा के साथ-साथ अपने धर्म के 29 नियमों को भी भूल गया है।

डॉ. गोवर्धन राम आचार्य ने कहा कि वील्होजी ने बिश्नोइयों के गांव-गांव जाकर धर्म का खूंटा गाडा और सभी बिश्नोइयों को एक जुट करके पुन: धर्म मार्ग पर लेकर आये। एक खूंटा रासीसर जिला बीकानेर में गाड़ दिया और वह हरा हो गया। यह हरा खेजड़ी का वृक्ष आज भी कायम है। उसके बाद पंच पंचायती का आरम्भ किया जो गांव में निर्णय लेते थे। मुख्य निर्णय जाम्भोलाव धाम में लिया जाता था। वर्तमान में रिश्ते टूटते है अन्तर्जातीय विवाह आदि इन सब को जोडने के लिए साधु संतो को आगे आना होगा तभी हमारा समाज गर्व से बिश्नोई कहलाने का सही हकदार होगा। कार्यक्रम के बाद भण्डारे का आयोजन हुआ जिसमें सभी श्रद्धालुओं ने प्रसाद लेकर अपने को धन्य किया व अपने गन्तव्य स्थान की ओर प्रस्थान किया। मेले में अमर-ज्योति व जांभाणी साहित्य अकादमी की ओर से स्टॉल लगाई गई, जहां लोगों का विशेष आकर्षण देखने को मिला।

❑ **सन्दीप गोदारा**, कालवास,
हिसार, मो. 99663-71529

**प्रेरणास्पद** - वर्तमान युग में दहेज प्रथा हिन्दु समाज में विशेषकर बिश्नोई समाज में चरम पर है। यह प्रथा मध्यम परिवार तक ही सीमित न होकर समाज के गणमान्य व घनाढ़य परिवारों में और अधिक है। इस प्रथा को करारी चोट प्रदान की है एक बिश्नोई परिवार ने। तलवण्डी बादशाह पुर जिला हिसार निवासी हरियाणा पुलिस में कार्यरत अमर चन्द जी सिहाग ने अपने सुपुत्र सुशील कुमार के विवाह में समठुणी के नाम पर केवल एक रूपया स्वीकार करके समाज के समाने एक अनूठी मिशाल कायम की। स्व. सुशील कुमार की शादी गांव सदलपुर निवासी श्री ओमप्रकाश सुपुत्र श्री हजारी लाल जी खीचड़ की बेटी के साथ सम्पन्न हुआ। समाज को इस दहेज प्रथा पर अंकुश लगाने के लिए इस शादी से प्रेरणा लेनी चाहिए।

# चिलत नवमी मेला – लालासर साथरी

निर्वाण स्थल लालासर साथरी में श्री गुरू जम्भेश्वर भगवान का 476 वें निर्वाण दिवस पर मेला आयोजित हुआ। 7 दिसम्बर की रात्री में गुरू महाराज का विशाल जागरण रखा गया। जिसमें समाज के सन्तों और कलाकारों ने प्रवचनों और साखियों से लोगों को लाभान्वित किया। जागरण में मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानंद जी, स्वामी भागीरथदास जी शास्त्री, महन्त स्वामी रामाकृष्ण जी संभराथल, स्वामी जुगति प्रकाश जी रोटू, स्वामी सोहन दास जी मुकाम, स्वामी चेतनप्रकाश जी, स्वामी हनुमानदास जी मेघावा, स्वामी लक्ष्मी नारायण जी संभराथल, स्वामी कृष्णदास जी, स्वामी स्वरूपानदं जी आदि सन्तों ने अपने प्रवचनों के माध्यम से सबदवाणी एवं जाम्भाणी संस्कृति पर प्रकाश डाला। गायक कलाकरों में श्री सहीराम जी खीचड़, रामस्वरूप जी खीचड़ (जे.डी.मगरा), रामकृष्ण जी पूनियां, हनुमान जी धायल व रामेश्वरी देवी ने साखियों व भजनों के द्वारा अपनी प्रस्तुती दी। प्रात: कालीन वेला में गुरूदेव की वेदमयी सबदवाणी से विशाल यज्ञ हुआ। तदोपरान्त स्वामी रामानंद जी आचार्य ने जाम्भाणी संस्कारों के प्रति लोगों को जागरूक किया। हित, चित और प्रीत से यज्ञ करने का सन्देश दिया। स्वामी भागीरथदास जी शास्त्री ने अपने उद्‌बोधन में नशों के द्वारा होने वाली हानियों के बारे में बताया और नशामुक्त जीवन जीने का आह्‌वन किया। लालसर साथरी के महन्त स्वामी राजेन्द्रनंद जी महाराज ने साथरी में पधारने वाले सभी सन्तों व श्रद्धालुओं के प्रति अपना आभार जताया। इस अवसर पर दूर-दूर से चलकर हजारों की संख्या में श्रद्धालु भक्त पधारे और गुरू महाराज के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। सभी श्रद्धालुओं ने भण्डारे में भोजन प्रसाद ग्रहण किया। साथरी निर्माणाधीन मन्दिर में दान दाताओं ने बढ़ चढ़कर अपना सहयोग प्रदान किया।

❑ **महन्त राजेन्द्रानंद महाराज**
लालासर साथरी, नोखा (बीकानेर)

# बीरबल शहीदी मेला आयोजित

वन्य जीव हिरण की रक्षार्थ आत्मोत्सर्ग करने वाले अमर शहीद लोहावट निवासी स्वं बीरबल खिचड़ की स्मृति में 17 दिसम्बर को शहीद लोहावट गांव में स्थित शहीदी की

समाधि पर शहीदी मेला आयोजित किया गया। इस मेले में लोहावट गांव वासियों के साथ-साथ आस-पास के गांवों के लोगों व समाज के प्रमुख नेताओं व अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के पदाधिकारियों ने भाग लिया। उपस्थिति समूह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि पूर्व सांसद श्री जसवतं सिंह बिश्नोई ने कहा कि वन्य जीवों की रक्षा हमारा परम धर्म है। हमें शहीदों से प्रेरणा लेनी चाहिए और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलना चाहिए। श्री मालाराम बिश्नोई ने शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि शहीद का रक्त कभी व्यर्थ नहीं जाता है बल्कि वह सदियों तक प्रेरणा देता है। पब्बाराम बिश्नोई भाजपा प्रदेशमंत्री,जगराम बिश्नोई भाजपा जिला उपाध्यक्ष,राकेश माचरा युवा मोर्चा जिला उपाध्यक्ष,महन्त मनीराम, श्याम खिचड, सहीराम सियाग, जीव रक्षा सभा राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री शिवराज जाखड़, सतीश पूनिया भाजपा प्रदेश महामंत्री, खम्मुराम बिश्नोई, फगलूराम खिचड, मेला कमेटी अध्यक्ष सुखराम बोला उपाध्यक्षव सगंठन मंत्री साहबराम जी रोहज, महासचिवश्री मांगीलाल बूड़िया ने भी शहीद बीरबल खिचड़ को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आह्‌वान किया कि हमें जीव रक्षा हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए।

# भेड में हिरणों का फिर शिकार

दीपावली की रात में 13 नवम्बर को लगभग 12 बजे भेड़ गांव की सरहद में बनबागरियों ने तीन ऊटों पर सवार होकर बन्दूक की गोली से हिरणों का शिकार शुरू किया। गोली की आवाज सुनकर श्री जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीवरक्षा प्रदेश संस्था ग्राम भेड़ के अध्यक्ष बाबूलाल लेघा, तहसील अध्यक्ष ओमप्रकाश लेघा, प्रदेश कोषाध्यक्ष अनोपाराम डूडी, ढ़ींगसरा के अध्यक्ष कानाराम फौजी, सदस्य रामनिवास, तहसील महामंत्री हनुमानराम ने टॉर्च के प्रकाश से शिकारियों का पीछा किया। चार घण्टे पीछा करने के बाद अचानक शिकारियों से उनका सामना हुआ। जिस पर प्रकाश पुत्र जवार नामक बनबागरिये ने उनको जान से मारने की नीयत से बन्दूक से फायर किया। मगर बाबूलाल लेघा बाल-बाल बच गए।जीवरक्षा कार्यकर्ताओं ने निरन्तर सात घण्टों तक पीछा करते हुए 30 किमी पैदल चलकर भावण्डा थाना क्षेत्र के ग्राम लालाप की सरहद में बनबागरियों के डेरों को ढूंढ़ा। जहां पर चार ऊट छकड़े उन पर कसने के पलाण जो खून से सने हुए थे आदि मिले। घटना की सूचना मिलने पर रात्रि में दो बजे से प्रदेशाध्यक्ष रामरतन बिश्नोई ने पीछा करने वाले कार्यकर्ताओं के साथ ही पुलिस कन्ट्रोल रूम नागौर, वृताधिकारी चन्द्रप्रकाश शर्मा, अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. प्यारेलाल शिवराम को घटना की जानकारी बराबर दी। बनबागरियों के डेरों के पास सघन तलाशी की तो 14 नवम्बर को सुबह 10 बजे तीन मृत चिंकारा हिरण मोहनराम राव निवासी खोड़वा के खेत में मिले। प्रदेशाध्यक्ष ने यह सूचना जिला कलक्टर अशोक भण्डारी, अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. प्यारेलाल शिवराम सहित सम्बन्धित सभी थानाधिकारियों तथा वन विभाग के अधिकारियों को दी। 30 किमी भूखे-प्यासे पैदल चलकर मृत हिरणों को ढूंढ़ने वाले कार्यकर्ताओं सहित लगभग 150 लोग मौके पर थे। जीवरक्षा के कार्यकर्ताओं ने 14 नवम्बर की पूरी रात मृत हिरणों के पास बिताई। उनके साथ ग्राम भावण्डा, डेहरू, लालाप, जोरावरपुरा, बैरास,गोवाकलां,खोड़वा, भेड़, ढ़ींगसरा, चावण्डिया, पांचला, जोधपुर जिले के हिंगोली सहित विभिन्न गांवों के 500 से अधिक लोग भजन-कीर्तन करते रहे। 15 नवम्बर को सुबह 6 बजते ही अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. प्यारेलाल, नागौर के वृताधिकारी चन्द्रप्रकाश शर्मा सहित पांच थानों के थानाधिकारी, वन विभाग के उच्चाधिकारियों सहित टीम एवं आरएसी की टुकड़ी मौके पर पंहुच गई। धरनास्थल पर मौजूद लोगों की मांग प्रदेशाध्यक्ष रामरतन बिश्नोई ने अधिकारियों को बताई जिस पर सहमति होने के बाद जानलेवा हमला करने तथा हिरणों का शिकार करने सम्बन्धी दो अलग-अलग मुकदमे पांचौड़ी थाना तथा वन विभाग द्वारा दर्ज किए गए। मृत हिरणों का पोस्टमार्टम मौके पर ही करवाया गया। तब तक पांच हजार से अधिक लोग मौके पर इकट्ठे हो गए। समाज ने मांग रखी कि बनबागरियों द्वारा अवैध रूप से सार्वजनिक भूमि पर किए गए अतिक्रमण को ध्वस्त किया जावे। ग्रामीणों एवं प्रशासन के बीच समझौता हुआ। जिसमें पुलिस के सभी अधिकारी, खींवसर के तहसीलदार, नागौर के तहसीलदार, आर.आई., पटवारी आदि ने कानूनी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए आगामी 23 नवम्बर को उक्त अतिक्रमण हटाना तय किया। लालाप में गोशाला के सामने सार्वजनिक स्थान पर दस हजार स्त्री पुरूष बच्चों एवं जिला प्रशासन तथा पुलिस प्रशासन के उच्चाधिकारियों सहित कर्मचारियों की उपस्थिति में हिन्दू रीति रिवाज से तीनों हिरणों का अंतिम संस्कार एक ही स्थान पर किया गया। 23 नवम्बर तक पूरा प्रशासन निष्क्रिय रहा। संस्था द्वारा 23 नवम्बर की सायं को लालाप ग्राम पुन: धरने की तैयारी हेतु बैठक का आयोजन किया गया। पुन: धरना देने की सूचना मिलते ही पुलिस ने जोधपुर जिले के ग्राम आसोप के डेरों में दबिश देकर तीनों शिकारियों को गिरफ्तार कर लिया और प्रदेशाध्यक्ष को मोबाईल पर सूचना दी। बाद में संस्था के पदाधिकारियों ने थाने जाकर थानेदार को धन्यवाद दिया।

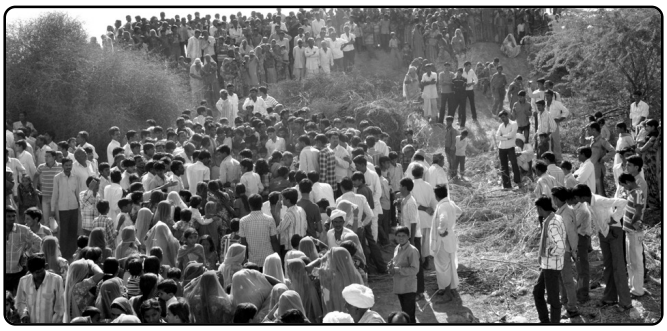

**हिरणों की समाधि पर उमड़ा जनसैलाब**

❑ **आर.पी. बिश्नोई'पत्रकार'**, प्रदेश मीडिया मंत्री
श्री जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीवरक्षा प्रदेश संस्था
(रजि.) राजस्थान, 92521-63775

**गुरु जम्भेश्वर भगवान के भजन, आरती, साखी, धुन,कथाओं का संग्रह करके इन्टरनेट पर डाला गया है। यह कार्य नागौर, राजस्थान निवासी रामप्रसाद सीगड़ ने किया है। निश्चित ही यह बहुत सहारनीय कार्य है।**
**वेबसाईट का लिंक इस प्रकार है www.jambheshwarbhajan.com**

# डबवाली पहुंचने हेतू रेल व अन्य सुविधा

23-25 फरवरी, 2013 को डबवाली में आयोजित होनेवाली राष्ट्रीय संगोष्ठी में पहुंचने हेतु यातायात सुविधा के बारे में अनेक सज्जनों ने जानकारी मांगी है। संगोष्ठी में भाग लेने के इच्छुक सज्जनों की सुविधा हेतु बताया जाता है कि डबवाली मठिण्डा-जोधपुर यहां से अनेक रेलगाड़ियां चलती है। उतरप्रदेश-दिल्ली की और गुहावटी-बीकानेर एक्सप्रैस, उतराखण्ड की ओर से हरिद्वार-बाड़मेर मेल, हृदय की ओर से पजांब मेल मठिण्डा तक आती है, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेरकी ओर सेबाड़मेर-हरिद्वार मेल, जम्मू तण्वी एक्सप्रैस आदि अनेक गाड़ियां आती है। चण्डीगढ़-कालका से कालका-बाड़मेर मेल आती है। इसके अतिरिक्त डबवाली में हिसार, हनुमानगढ़ अबोहर, भठिन्डा आदि से सड़क मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है। दूर-दराज से रेल मार्ग से आने वालों से अनुरोध ा है कि किसी असुविधा से बचने के लिए समय से अपना आरक्षण करवा ले। बाहर से भाग लेने वाले प्रतिभामियां से अनुरोध है कि ने अपने आगमन की सूचना 31 जनवरी तक अवश्य दे दें ताकि अके आवास आदि की व्यवस्था की जा सके। विद्वान लेखकों से अनुरोध है कि वे अपना लेख 31 जनवरी तक अवश्य पहुंच दे। लेख भेजने हेतु विषय व विस्तृत सूचना अक्तूबर, 2012 की अमर-ज्योति व जांभाणी साहित्य अकादमी की वेबसाईट www.jambhani.com पर देखें।

❑ **इन्द्रजीत धारणिया,** सचिव बिश्नोई सभा, डबवाली, सिरसा (हरि.), मो. 9416363802

# जीव रक्षा बिश्नोई सभा का सदस्यता अभियान जारी

अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा की हरियाणा प्रदेश शाखा द्वारा हरियाणा में ग्रामीण स्तर पर सदस्यता अभियान चलाया गया है। इस अभियान के दौरान प्रत्येक गांव से सभा के सदस्य बनाएं जाऐंगे तथा लोगों को जीव रक्षा के लिए जागरूक किया जाएगा। यह अभियान 15 फरवरी 2013 तक पूरा होगा। सभी जीव प्रेमियों से अनुरोध है कि वे जीव रक्षा सभा के सदस्य बन कर जीव रक्षा में सहयोग दें।

❑ **कामरेड रामेश्वर डेलू,** प्रदेशाध्यक्ष (हरियाणा) मो. 9896196200

# सामाजिक क्षति

बिश्नोई सभा सिरसा की कार्यकारिणी के सदस्य श्री अमर सिंह बैनिवाल निवासी बुर्जभंगू की माता श्रीमती परमेश्वरी देवी जिनका 90 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। आप एक बहुत ही धार्मिक महिला थी। इस दु:ख की घड़ी में भगवान आपके परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें और इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

श्री लादूराम मांझू सुपुत्र श्री इमरता राम मांझू, निवासी सीतो गुनों, त. अबोहर, जिला फाजिलका, पंजाब का स्वर्गवास 85 वर्ष की आयु में 12-12-12 को हो गया। आप गुरु जम्भेश्वर भगवान के अनन्य भक्त और समर्पित समाज सेवी थे इस दु:ख की घड़ी में भगवान आपके परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें और इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

श्री छबीलदास पंवार (सेवानिवृत प्रधानाचार्य) निवासी असरावां जिला हिसार का आकस्मिक निधन 59 वर्ष की आयु में 29 अक्तूबर, 2012 को हो गया। आप एक प्रतिष्ठि शिक्षाविद्, कुशल प्रशासक और समर्पित समाज सेवी थे। आपके निधन से शिक्षा जगत व समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। इस दु:ख की घड़ी में भगवान आपके परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें और इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

# जांभाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रम सम्वत् 2069, पौष की अमावस्या

लगेगी : 10-01-2013, बृहस्पतिवार, रात्रि 4:35 बजे
(अर्थात् शुक्रवार सूर्योदय से पूर्व 4:35 पर)

उतरेगी : 11-01-2013, शुक्रवार, रात्रि 01:13 बजे

विक्रम सम्वत् 2069, माघ की अमावस्या

लगेगी : 09-02-2013, शनिवार, दोपहर बाद 3:19 बजे

उतरेगी : 10-02-2013, रविवार, दोपहर 12:49 बजे

विक्रम सम्वत् 2069, फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी : 10-03-2013, रविवार, रात्रि 2:29 बजे

उतरेगी : 11-03-2013, सोमवार, रात्रि 01:20 बजे

**पौष अमावस्या मेला : गाडरवाड़ा (म.प्र.) : 11 जनवरी, 2013**

**माघ अमावस्या मेला : इन्द्र नगर (फलोदी), खातेगांव (म.प्र.) : 10 फरवरी, 2013**

**फाल्गुन अमावस्या मेला : मुकाम, संभराथल, पीपासर, कांठ, लोहावट, सोनड़ी, मेघावा, भींयासर : 11 मार्च, 2013**

पुजारी : बनवारी लाल सोढ़ा मो.: 094164-07290

# उन्नतीस धर्म नियम

1. तीस दिन सूतक रखना।
2. पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
3. प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
4. शील का पालन करना व संतोष रखना।
5. बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
6. त्रिकाल संध्या–उपासना करना।
7. संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
8. निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
9. पानी, ईन्धन और दूध को छानबीन कर प्रयोग में लेना।
10. वाणी विचार कर बोलना।
11. क्षमा–दया धारण करना।
12. चोरी नहीं करनी।
13. निन्दा नहीं करनी।
14. झूठ नहीं बोलना।
15. वाद–विवाद का त्याग करना।
16. अमावस्या का व्रत रखना।
17. विष्णु का भजन करना।
18. जीव दया पालणी।
19. हरा वृक्ष नहीं काटना।
20. काम,क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
21. रसोई अपने हाथ से बनानी।
22. थाट अमर रखना।
23. बैल बधिया नहीं कराना ।
24. अमल नहीं खाना।
25. तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
26. भांग नहीं पीना।
27. मद्यपान नहीं करना।
28. मांस नहीं खाना।
29. नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI NO. : 12406/57

POSTAL REGD. NO. L/Regd. NP/HSR/01/2011-2013
L/WPP/HSR/03/11-13




मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने सूचना प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जनवरी, 2013 को प्रकाशित किया।